04- सफल होने और सफलता की कहानी अलग ही दिखती है

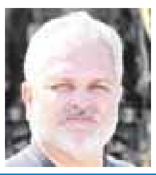
05- महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत...

06- ग्रीष्म ऋतु में पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए बच्चों...

07- बीमारियों से कराहती फिल्मी दुनिया

A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 21 अप्रैल, 2024

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 182 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

हो सकता है पानी की एक बूंद आपके लिये कोई मायने नहीं रखती हो पर इनके लिये एक एक बूंद जीवन दाता है!

फोटो: बंशीलाल परमार

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

जैसे अमेठी छोड़कर भागना पड़ा, वैसे वायनाड छोड़कर भागेंगे

नांदेड़ में पीएम मोदी बोले-राहुल को वायनाड में भी दिख रहा संकट

नांदेड़ (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार दोपहर महाराष्ट्र के नांदेड़ में चुनावी रैली की जहां उन्होंने पहले चरण में वोट देने वालों को धन्यवाद दिया। पीएम ने कांग्रेस और इंडी गठबंधन पर फिर निशाना साधा। उन्होंने कहा- इंडी गठबंधन को उम्मीदवार नहीं मिल रहा। वायनाड में राहुल को संकट दिख रहा है। जैसे वे अमेठी छोड़कर भागे हैं, उन्हें वायनाड छोड़कर भी भागना पड़ेगा। नांदेड़ के बाद पीएम मोदी ने परभणी भी जनसभा की। यहां उन्होंने कहा, 2014 में जब मैं पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ रहा था, तब आतंकी हमलों के डर, आए दिन बम धमाके की खबरें छाई रहती थीं। 5 साल बाद 2019 में सीमा पार से होने वाले हमलों की चर्चा बंद हो गई और सर्जिकल स्ट्राइक की चर्चा होने लगी। ये तो मोदी है, घर में घुसकर मारता है। हर जगह यही चर्चा होने

लगी। पीएम मोदी ने आगे कहा कि सर्जिकल स्ट्राइक की बात सुनकर शौर्य की ये धरती महाराष्ट्र भी गर्व से भर गई थी। हिंदुस्तान के हर नागरिक को इस पर गर्व हुआ था। एनडीए सरकार सबका साथ, सबका विकास के मंत्र पर काम करती है। हमारी सरकार हर जाति, पंथ के लिए काम करती है। पीएम ने कहा कि 4 जून के बाद इंडी गठबंधन एक-दूसरे के कपड़े फाड़ेगा। एक दूसरे के बाल नोंचने वाले हैं। आप बताईए कोई भी समझदार नागरिक इनके लिए वोट करेगा क्या। मैं मतदाताओं को कहता हूं कि आइए जी-भरकर एनडीए को वोट दीजिए। एनडीए को वोट करना है। आज भी एनडीए सरकार गरीब के लिए कोई काम करती है।

सुप्रभात

एक पेड़ की छाँह में ठहरता हूँ
यह पगडन्डी जो दूर तलक जाती है
जंगल जो महकता था तुम्हारी आँखों में
एक नदी जो उछलते गुजरती थी
एक पहाड़ जो रोड़ा बनता था
हमारे प्रेम में, सब स्थिर है अब

उस बरगद की अमर बेल को छोड़ आया
उन घोंसलों को छोड़ आया
जो कुएँ की मुंडेर पर उल्टे लटके थे
चमगादड़ों के उजाड़ को त्याग दिया
उस सुरंग से उजाले में आया हूँ कि
यहाँ से कोई तो राह होगी मेरे लिये

मैं उचाट सड़क पर एकदम अकेला हूँ
जैसे कोई साधु दशकों से पैदल चल रहा हो
यायावरी करते हुए और कोई मंज़िल नही
जहाँ सूरज डूबता है वही ठौर है मेरा
रात भी अब उजियारी है बहुत कालिमा के संग
शुक्र तारा अब भी वही से निकलता है

बहुत कुछ पीछे छोड़ आया हूँ
दुःखों की गठरियाँ, पश्चाताप और दुखस्वप्न
मैं बढ़ने को उद्धत हूँ बग़ैर प्रतिफल की आस में
रास्ते गर्म है, मृगतृष्णायें बड़ी है बवंडरों में
अपेक्षा दुख का मूल कारण है, जानता हूँ
सब छोड़कर एक बार फिर से निकला हूँ

मैं फिर से कबीर हो जाना चाहता हूँ।

- संदीप नाईक

खूब छूटने वाले हैं पसीने! तापमान पहुंचा '43' पार

एमपी-छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र समेत 12 राज्यों में हीटवेव

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम विभाग के मुताबिक रविवार को 12 राज्यों में हीटवेव (लू) चलेगी। इनमें बिहार, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, झारखंड, गुजरात और तमिलनाडु शामिल हैं। यहां हीटवेव की स्थिति 3 से 4 दिनों तक जारी रहेगी।

इन राज्यों के 17 शहरों में शुक्रवार को दिन का तापमान 43 डिग्री के करीब दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने 17 राज्य में बारिश का अनुमान भी लगाया है। इनमें जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, असम, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, अरुणाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी और कर्नाटक शामिल हैं।

भारतीय मौसम विभाग ने सोमवार को बताया कि इस बार जून से सितंबर तक मानसून सामान्य से बेहतर रहेगा। मौसम विभाग 104 से 110 फीसदी के बीच बारिश को सामान्य से बेहतर मानता है। यह फसलों के लिए अच्छा संकेत है। आईएमडी ने बताया कि 2024 में 106 फीसदी यानी 87 सेंटीमीटर बारिश हो सकती है। 4 महीने के मानसून सीजन के लिए लॉन्ग पीरियड एवरेज 868.6 मिलीमीटर यानी 86.86 सेंटीमीटर होता है। यानी मानसून सीजन में कुल इतनी बारिश होनी चाहिए। वेदर एजेंसी स्काईमेट ने मंगलवार 9 अप्रैल को बताया कि इस बार मानसून सामान्य रहेगा। यानी जून से सितंबर तक 4 महीने में औसत या सामान्य बारिश होगी। मौसम विभाग 96 से 104 फीसदी के बीच बारिश को औसत या सामान्य मानता है। यह फसलों के लिए अच्छा संकेत है। मध्यप्रदेश में अगले 3 दिन बारिश होने के आसार हैं।

खंडवा में सीएम मोहन यादव का रोड शो, बोले-

17 साल में दादी गरीबी नहीं हटा पाई, पप्पू जी कहते है एक झटके में हटा दूंगा

खंडवा (नप्र)। खंडवा में मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने भाजपा प्रत्याशी ज्ञानेश्वर पाटिल का नामांकन जमा कराया। इसके बाद रोड शो करते हुए सभा को संबोधित किया। सीएम ने कहा कि दुनिया की ऐसी कोई ताकत नहीं है, जो कमल को खिलने से रोक पाए। 400 सीटों के साथ तीसरी बार भाजपा की सरकार बनने जा रही है। राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि उनके परनाना ने 17 साल, दादी ने 17 साल सरकार चलाई। मम्मी ने पीछे से सरकार चलाई, खुद ने भी कागज फाड़े लेकिन गरीबी नहीं हटा पाए। अब पप्पू जी कहते है कि सरकार बनवा दो, एक झटके में गरीबी हटा दूंगा।

सीएम यादव ने कहा कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद में कदम रखते ही लोकतंत्र के पावन मंदिर को गौरवांवित किया है। अमेरिका, इंग्लैंड, जापान जैसे 22 देशों को मिला लो। उनकी जितनी आबादी होगी, उतने 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त राशन देकर मोदी जी ने उनकी भूख की व्यवस्था की है। गरीब का मकान बनाया है, चाहे शहर हो या गांव। दूसरी तरफ राहुल गांधी है, जो यूपी में हारे तो केरल जा भागे। अरे अबकी बार हारे तो कहां जाओंगे। केरल के आगे तो समुंदर है, डूब जाओंगे।

सीएम ने पहले नामांकन कराया, फिर रोड शो, सभा की

मुख्यमंत्री मोहन यादव का हेलीकॉप्टर नागचून स्थित हवाई पट्टी पर उतरा। वहां से वे बाय रोड कलेक्टर कार्यालय पहुंचे। जहां पार्टी प्रत्याशी ज्ञानेश्वर पाटिल का नामांकन कराया। इसके बाद नगर निगम तिराहे से रोड शो में शामिल हुए। रोड शो नगर निगम से घंटाघर, बांबे बाजार, केवलराम चौक होते हुए बस स्टैंड से ओवरब्रिज होकर भाजपा कार्यालय तक पहुंचा। सूरजकुंड खेल मैदान पर सभा हुई। सभा में अनुमान के हिसाब से कार्यकर्ता नहीं पहुंचे तो थोड़ी देर के लिए सीएम को रूकना पड़ा। हालांकि कार्यक्रम के दौरान कुर्सियां खाली रही।

अरुण यादव के करीबी महेंद्र सावनेर ने छोड़ी कांग्रेस

मुख्यमंत्री मोहन यादव के सभा मंच पर कांग्रेस नेता व छैगांवमाखन जनपद अध्यक्ष महेंद्र सावनेर ने भाजपा ज्वाइन कर ली। किसानों से जुड़े महेंद्र सावनेर की पंधाना विधानसभा क्षेत्र में अच्छी पकड़ है। वे पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव के समर्थक है। सावनेर के भाजपा जॉइन करने से कांग्रेस के राजपूत समाज वाले वोट बैंक पर भी असर पड़ेगा। उन्हें सीएम मोहन यादव ने भाजपा की सदस्यता दिलाई। इस दौरान कांग्रेस पार्षद ज्योति कन्हैया वर्मा ने भी भाजपा जॉइन की।

सरकार बनते ही अग्निवीर योजना को उठाकर फेंक देंगे

राहुल गांधी बोले-हिंदुस्तान को 2 तरह के शहीद नहीं चाहिए

भागलपुर (एजेंसी)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भागलपुर में जनसभा की। यहां उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग बात करते हैं, इतनी सीटें

आएंगी, उतनी सीटें आएंगी, लेकिन मैं कहता हूं- एनडीए को 150 से ज्यादा सीट नहीं आएगी। उन्होंने आगे कहा कि हमारी सरकार बनते ही अग्निवीर योजना को उठाकर फेंक देंगे। देश को 2 तरह के शहीद नहीं चाहिए। राहुल गांधी के 12 मिनट के भाषण में उनका जोर रोजगार पर था। उन्होंने बताया कि इंडी गठबंधन की सरकार बनी तो किस तरह की योजना लाएंगे। उन्होंने कहा कि जो पैसा मोदी सरकार ने अमीरों में बांटा वो हमारी सरकार बनी तो गरीबों को देंगे। भागलपुर सैंडिस कंपाउंड में राहुल की सभा में तेजस्वी यादव, मुकेश सहनी, प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश सिंह भी शामिल हुए।

रामनवमी हिंसा में नप गए बंगाल के 2 पुलिस अफसर

- मुर्शिदाबाद और पूर्वी मेदिनीपुर में हुई थी हिसा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में रामनवमी के अवसर पर जुलूस निकाले जाने के दौरान हुई हिंसा को रोकने में कथित तौर पर नाकाम रहने को चुनाव आयोग ने गंभीरता से लिया है। आयोग ने सफल रहने पर शुक्रवार को दो पुलिस थानों के प्रभारियों को निलंबित कर दिया। चुनाव आयोग के अनुसार, निर्देशों के बावजूद शक्तिपुर और बेलडांगा पुलिस थानों के प्रभारी ''धार्मिक हिंसा'' को रोकने में विफल रहे। एक अधिकारी ने बताया, ''दोनों अधिकारी जिला पुलिस मुख्यालय में रहेंगे और चुनाव संबंधी कोई भी कार्य नहीं कर पाएंगे। संबंधित अधिकारियों को दोनों अधिकारियों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल करना चाहिए।'' उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी से उनके स्थान पर नियुक्ति के लिए नाम भेजने को कहा है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 40 °c

न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 21 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

मोदी सरकार के तीन 'आपराधिक' कानूनों से खुश हो गए सीजेआई

बोले डीवाई चन्द्रचूड़-भारत बदल रहा है, नए युग की शुरुआत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ ने शनिवार को देश में तीन नए आपराधिक कानून बनाए जाने की खूब तारीफ की। उन्होंने कहा कि यह भारत के बदलने का स्पष्ट संकेत है। सीजेआई के अनुसार, नए कानूनों ने क्रिमिनल जस्टिस को लेकर भारत के कानूनी ढांचे को एक नए युग में बदल दिया है। उन्होंने 'आपराधिक न्याय प्रणाली के प्रशासन में भारत का प्रगतिशील पथ' विषय पर यहां आयोजित एक सम्मेलन में कहा कि नए कानून तभी सफल होंगे यदि ''हम नागरिकों के रूप में उन्हें अपनाएं।'' प्रधान न्यायाधीश ने नए आपराधिक न्याय कानूनों के लागू होने को समाज के लिए ऐतिहासिक क्षण बताते हुए कहा कि भारत अपनी आपराधिक न्याय प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव के लिए तैयार है। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा कि नए अधिनियमित कानूनों ने आपराधिक न्याय पर भारत

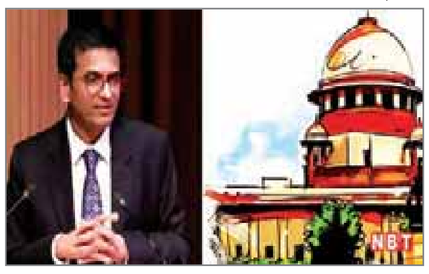

के कानूनी ढांचे को एक नए युग में बदल दिया है। उन्होंने कहा कि पीड़ितों के हितों की रक्षा करने और अपराधों की जांच एवं अभियोजन में कुशलता के लिए अत्यावश्यक सुधार किए गए हैं। सीजेआई ने कहा, ''संसद द्वारा इन कानूनों को पास किया जाना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि भारत बदल रहा है एवं आगे बढ़ रहा है और मौजूदा चुनौतियों से निपटने के लिए नए कानूनी उपकरणों की जरूरत है।''

धमकाने की कोशिश मत करो, जेल जाने से नहीं डरते

केरल सीएम पिनराई विजयन ने राहुल गांधी को खूब सुनाया

तिरुअनंतपुरम (एजेंसी)। केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी पर शुक्रवार को पलटवार किया।

उन्होंने कहा कि ऐसा क्यों है कि केंद्रीय जांच एजेंसियों ने उनसे पूछताछ या गिरफ्तारी नहीं की। इससे एक दिन पहले, राहुल ने मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता विजयन पर निशाना साधा था। उन्होंने कहा कि जब वह भाजपा के खिलाफ लड़ रहे हैं तो केरल के मुख्यमंत्री उन पर हमले क्यों कर रहे हैं। कांग्रेस नेता ने यह भी कहा कि ईडी ने उनसे 55 घंटे तक पूछताछ की, उनकी लोकसभा सदस्यता और उनका आधिकारिक आवास छीन लिया गया। साथ ही, वर्तमान में विपक्ष से जुड़े दो मुख्यमंत्री जेल में हैं, लेकिन केरल के मुख्यमंत्री के साथ ऐसा कुछ नहीं हो रहा है। सीएम विजयन ने कोझिकोड की एक चुनावी जनसभा में उन पर पलटवार किया। उन्होंने कहा कि राहुल की दादी और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल के दौरान कितनों को जेल में डाल दिया था।

शरद पवार बोले-लोग जानते हैं एनसीपी किसने बनाई

भाजपा ने ईडी व सीबीआई का इस्तेमाल करके पार्टी तोड़ी

एनसीपी चीफ बोले-मोदी का करिश्मा पहले जैसा नहीं रहा

मुंबई (एजेंसी)। एनसीपी शरदचंद्र पवार के चीफ शरद पवार का कहना है कि उनकी पार्टी ही असली एनसीपी है। इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि कोई भी कह सकता है असली एनसीपी हम हैं लेकिन लोगों को पता है कि एनसीपी किसने बनाई, किसने इन्हें मंत्री बनाया। लोग इन पर हंस रहे हैं। हम बीजेपी के खिलाफ लड़े और जीते, अब वे (अजित पवार) बीजेपी के साथ खड़े हैं। शरद पवार ने आगे कहा कि कुछ अवसरवादी लोग अब वो बीजेपी के साथ खड़े हैं। ये लोग मुझे कहते थे कि अगर हम नहीं जाएंगे तो हम पर ईडी एक्शन लेगा।

उन्होंने लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर कहा कि मोदी का जो करिश्मा पहले था, अब वैसा नहीं रहा। महाराष्ट्र में कम से कम 50 प्रतिशत सीटें हम जीतेंगे। शरद पवार का कहना है कि भाजपा ने ईडी का इस्तेमाल करके कुछ ऐसे कदम उठाए जिसकी वजह से हमारे साथी उनके कहने पर चले गए। बीजेपी को मालूम था कि महाराष्ट्र में वो नहीं जीत सकते इसलिए ईडी, सीबीआई का इस्तेमाल कर ये कदम उठाए गए। महाराष्ट्र में जो हुआ है, लोगों को ये बिलकुल पसंद नहीं आ रहा है। लोगों को डराकर साथ में लाना पसंद नहीं किया जा रहा है।

अब डीडी न्यूज के लोगो का रंग लाल से हुआ नारंगी

टीएमसी ने कहा-दूरदर्शन का भगवाकरण हुआ, ये प्रसार भारती नहीं, प्रचार भारती है

नई दिल्ली (एजेंसी)। पब्लिक ब्रॉडकास्टर दूरदर्शन ने अंग्रेजी चैनल डीडी न्यूज के लोगो का रंग लाल से बदलकर नारंगी कर दिया है। इस पर तृणमूल कांग्रेस के राज्यसभा सांसद और प्रसार भारती के पूर्व सीईओ जवाहर सरकार ने कहा कि दूरदर्शन का भगवाकरण हो गया है। अब ये प्रसार भारती नहीं, प्रचार भारती हो गया है। 16 अप्रैल को दूरदर्शन ने सोशल मीडिया एक्स पर नया प्रमोशनल वीडियो शेयर किया। इसके कैप्शन में लिखा- हालांकि हमारे मूल्य वही हैं, अब हम एक नए अवतार में उपलब्ध हैं। ऐसी समाचार यात्रा के लिए तैयार हो जाएं जो पहले कभी नहीं देखी गई।

बिल्कुल नए डीडी न्यूज का अनुभव करें। डीडी न्यूज - भरोसा सच का। वहीं यूपीए सरकार में सूचना एवं प्रसारण मंत्री रह चुके कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने कहा- दूरदर्शन के लोगो का रंग बदलना सरकारी संस्थानों पर कब्जा करने का सरकार का प्रयास है। ऐसे कदम देश के पब्लिक ब्रॉडकास्टर की विश्वसनीयता को कमजोर करते हैं। जवाहर सरकार ने एक वीडियो जारी कर कहा- चुनाव से ठीक पहले प्रसार भारती के पूर्व एमडी के रूप में दूरदर्शन के लोगो का भगवाकरण देखकर दुख होता है। एक तटस्थ पब्लिक ब्रॉडकास्टर अब पक्षपाती सरकार के साथ एक धर्म और संघ परिवार के रंग को शामिल करके मतदाताओं को प्रभावित करेगा। सरकार ने कहा- मैं यह महसूस कर रहा हूं कि यह अब प्रसार भारती नहीं है, यह प्रचार भारती है। सरकार ने इसे आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन भी बताया है। सरकार साल 2012 से साल 2016 तक दूरदर्शन और ऑल इंडिया रेडियो की देखरेख करने वाली संस्था प्रसार भारती के सीईओ रह चुके हैं। प्रसार भारती के वर्तमान सीईओ गौरव द्विवेदी ने बातचीत में कहा- लोगो का रंग नारंगी है न कि भगवा। सिर्फ लोगो में ही बदलाव नहीं हुआ है, बल्कि हमने डीडी के पूरे लुक और फील को अपग्रेड किया गया है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि लोग इस बारे में अनर्गल टिप्पणी कर रहे हैं। हम पिछले छह-आठ महीने से डीडी के लुक और फील को बदलने पर काम कर रहे थे। उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा- भगवा से इतनी नफरत है इन लोगों को। भगवा रंग का आनंद ये लोग नहीं ले सकते। ये लोग सिर्फ तुष्टिकरण करने वाले लोग है। वहीं आंध्र प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष ने कहा-जब दूरदर्शन 1959 में लॉन्च किया गया था, तो इसका लोगो भगवा था। सरकार ने मूल लोगो को ही अपनाया है, तो लिबरल्स और कांग्रेस नाराजगी जता रहे हैं।

न आरक्षण हटाएंगे, न सेक्युलर शब्द और न हटाने देंगे

संविधान बदलने के आरोपों पर भड़के गृहमंत्री अमित शाह

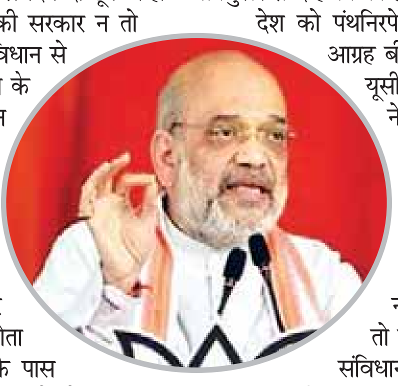

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा चुनाव के पहले दिन दो टूक कहा कि उनकी पार्टी और भाजपा की सरकार न तो आरक्षण हटाएगी और न ही संविधान से सेक्युलर शब्द हटाएगी। गुजरात के गांधीनगर सीट पर नामांकन दाखिल करने के बाद एक इंटरव्यू में अमित शाह ने कहा कि कांग्रेस ऐसे आरोप लगाकर देशवासियों को गुमराह कर रही है। उन्होंने दो टूक लहजे में कहा कि अगर भाजपा को संविधान बदलना होता तो पिछले 10 सालों से उसके पास बहुमत है, वह दस सालों में ऐसा कभी भी कर सकती थी लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने बहुमत का इस्तेमाल अनुच्छेद 370 हटाने में, नागरिकता संशोधन कानून लाने में, तीन तलाक समाप्त करने में किया है। संविधान से पंथनिरपेक्ष (सेक्युलर) शब्द हटाने के आरोपों पर उन्होंने कहा, सेक्युलर शब्द हटाने की हमें कोई जरूरत नहीं है। इस देश को पंथनिरपेक्ष बनाने का सबसे बड़ा आग्रह बीजेपी का है, इसीलिए हम यूसीसी ला रहे हैं। केंद्रीय मंत्री ने कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए कहा, वो (कांग्रेस) देश को शरिया के नाम पर चलाना चाहती है, इसलिए उन्हें सेक्युलर बनने की जरूरत है, हमें नहीं। शाह ने कहा कि हम तो कह रहे हैं कि इस देश का संविधान धर्म के आधार पर होना चाहिए। शाह ने राहुल पर भी भड़ास निकाली और कहा कि जिस तरह से वह कहते फिर रहे हैं कि भाजपा आरक्षण हटा देगी तो ये बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि भाजपा ना तो आरक्षण हटाएगी और ना ही हटाने देगी।

मोदी सरकार के मुरीद हुए अजमेर दरगाह के दीवान

राम मंदिर से लेकर सीएए तक का किया जिक्र, की तारीफ

जयपुर (एजेंसी)। अजमेर शरीफ दरगाह के दीवान भी अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार और भाजपा के मुरीद हो गए हैं। उन्होंने राम मंदिर से लेकर सीएए तक जैसे कई मुद्दों पर खुलकर भाजपा के कामों का समर्थन करते हुए विपक्ष पर निशाना भी साधा है। उन्होंने कहा कि देश प्रगति कर रहा है और आज दुनिया में भारत का जो मुकाम है वह भाजपा सरकार की बदौलत है। लोकसभा चुनावों के बीच अजमेर शरीफ दरगाह के दीवान इस तरह के बयानों को

काफी अहम माना जा रहा है। वहीं, विपक्ष के इस आरोप पर कि भाजपा संविधान बदलना चाहती है। इस पर अजमेर दरगाह के दीवान सैयद जैनुल आबेदीन अली खान ने कहा कि एक गलत भ्रम पैदा किया जा रहा है। संशोधन करना अलग बात है। इसे संविधान बदलने से नहीं जोड़ा जा सकता है। दरगाह के दीवान ने शनिवार को एक इंटरव्यू में कहा कि संविधान 1950 में बनाया गया था, तब से लेकर अब तक संसद में इसमें कितने संशोधन किए गए हैं। राष्ट्रहित और जनहित में यदि संशोधन की जरूरत होगी तो किए ही जाएगे। झूठा भ्रम पैदा किया जा रहा है। क्या 1975 में इंदिरा गांधी द्वारा लगाया गया आपातकाल एक संशोधन नहीं था। संशोधन करने को संविधान बदलने से नहीं जोड़ा जा सकता है। सैयद जैनुल ने आगे भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की तारीफ करते हुए कहा कि देश पिछले 10 वर्षों में प्रगति कर रहा है और दुनिया में देश ने जो मुकाम हासिल किया है वह मौजूदा सरकार की देन है।

कर्नाटक में कांग्रेस पार्षद की बेटी की हत्या को लेकर संग्राम

- लड़की के पिता और बीजेपी ने लव जिहाद बताया, सिद्धारमैया बोले-हत्या निजी कारणों से की गई

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के हुबली में कांग्रेस पार्षद निरंजन हिरेमथ की बेटी के मर्डर केस को भाजपा ने लव जिहाद का मामला बताया है। केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने कहा कि इस घटना के पीछे लव जिहाद का एंगल है। कांग्रेस के शासन में कानून

व्यवस्था पूरी तरह से खराब हो गई है। उधर, लड़की के पिता ने भी घटना को लव जिहाद का मामला बताया। उन्होंने दावा किया कि आरोपी ने उनकी बेटी को फंसाने की योजना बनाई थी। वे उसे धमकी दे रहे थे, लेकिन हमारी लड़की ने इस पर ध्यान नहीं दिया। इस बीच राज्य के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने लव जिहाद के दावों को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा कि यह हत्या निजी कारणों से की गई है और राज्य में कानून व्यवस्था बिल्कुल दुरुस्त है। दरअसल, कर्नाटक के हुबली स्थित बीवीबी कॉलेज कैंपस में गुरुवार को 23 साल की नेहा हिरेमथ की हत्या कर दी गई।

अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बढ़ी मुश्किलें

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। न्यूयॉर्क की एक अपीली अदालत ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा एक एडल्ट स्टार को गुप्त रूप से धन देने संबंधी मामले की सुनवाई रोके जाने की आखिरी समय में की गई कोशिश को शुक्रवार को खारिज कर दिया। ट्रंप ने जूरी के चयन में अनुचित जल्दबाजी की बचाव पक्ष की शिकायतों के मद्देनजर यह अनुरोध किया था। न्यायमूर्ति मार्शा माइकल ने संक्षिप्त सुनवाई के कुछ ही मिनट बाद फैसला सुनाया। सुनवाई रोके जाने के अनुरोध पर मध्य-स्तरीय अपीली अदालत में दलीलें उस समय पेश की गई जब कुछ ही घंटों पहले इस मामले की सुनवाई के लिए जूरी चयन प्रक्रिया पूरी हुई थी। अदालत के इस फैसले के बाद ट्रंप के खिलाफ बहस शुरू हो सकेगी।

सलमान केस में अब अनमोल बिश्नोई भी आरोपी, केस दर्ज

पुलिस ने बताया-होली पर ट्रेनिंग के लिए बिहार गए थे शूटर्स

मुंबई (एजेंसी)। सलमान खान केस में मुंबई क्राइम ब्रांच ने अब तक दो शूटरों-विक्की गुप्ता और सागर पाल को आरोपी बनाया था जिन्हें मंगलवार को गिरफ्तार भी कर लिया गया। इस केस में अब आरोपी के रूप में अनमोल बिश्नोई का भी नाम जोड़ा गया

है, जो जेल में बंद लॉरेंस बिश्नोई का भाई है। मुंबई पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को बातचीत में इस खबर की पुष्टि की। अधिकारी के अनुसार, अनमोल के खिलाफ मुंबई में यह पहला केस दर्ज है। मंगलवार को विक्की और सागर की रिमांड अप्लीकेशन में मुंबई क्राइम ब्रांच ने एक वॉन्टेड आरोपी का जिक्र किया था, लेकिन उसका नाम नहीं लिखा था। रिमांड अप्लीकेशन में एक केस डायरी का जिक्र किया गया था और कहा गया था कि एक आरोपी ने फेसबुक पर इस शूटआउट की जिम्मेदारी ली है। क्राइम ब्रांच सूत्रों के अनुसार, इस फेसबुक अकाउंट को वेरीफाई किया गया है। इसके बाद अनमोल को आरोपी बनाया गया है।

साहित्य का विमर्श स्थापित करने का सूत्रपात किया 'समकालीन सप्तक' ने

अजय बोकिल सहित सात कवियों के काव्य संकलन पर चर्चा एवं काव्यपाठ

भोपाल। 'समकालीन सप्तक' के सात कवियों के कविता संकलन पर तीन दिवसीय समारोह तीन अलग-अलग स्थानों पर हुआ, जिसमें गंभीर विमर्श और कविता पाठ आयोजित किया गया । इस चर्चित कविता संकलन का लोकार्पण इसी वर्ष ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में किया गया था ।

पहले दिन कल रात यहाँ दुष्यंत संग्रहालय में तीन घंटे तक सात अतिथि-विद्वानों ने एक-एक कविता पर खुलकर अपनी बात रखी । विद्वानों ने कहा कि यह इसलिए संभव हो सका, क्योंकि यह साहित्यिक कृति इसके लिए अत्यधिक समर्थ थी ।

संकलन के कवि हैं-डॉ वन्दना शुक्ला, डॉ. पीयूष अवस्थी (दोनों चंडीगढ़), पंकज पाठक, डॉ मंजु तिवारी, अजय बोकिल, डॉ. राजीव सक्सेना और विवेक मृदुल (सभी भोपाल) । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे, अध्यक्षता की सेवानिवृत्त अपर मुख्य सचिव मनोज श्रीवास्तव ने । मुख्य वक्ता मप्र साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे थे । सारस्वत अतिथि थे । पद्मश्री अलंकृत ध्रुपद गायक उमाकांत गुंदेचा । विषय प्रवर्तक वरिष्ठ कवि और आलोचक बलराम गुमाश्ता थे और विशेष अतिथि थे महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी और वरिष्ठ कथाकार-आलोचक मुकेश वर्मा ।

संतोष चौबे ने कहा कि इस संकलन की कविताएँ वर्तमान समय का दस्तावेज़ हैं । इन कवियों ने समय को जीकर कविता लिखने की एक नई दृष्टि विकसित की है । मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि कविताओं का बिम्ब विधान विलक्षण है। कवियों ने, जहाँ तक दृष्टि जाती है, उसके आगे का भी देखकर, जो लिखा है, वह बहुत दूर तक अपना गहरा प्रभाव छोड़ेगा । डॉ. विकास दवे ने कहा कि सभी कवि समय से आगे जाकर देख और सोच रहे हैं, पर वर्तमान समय पर भी उनकी गहरी पकड़ है । उमाकांत गुंदेचा ने कविताओं को संगीत से जोड़कर अपनी बात रखी, तो बलराम गुमाश्ता ने बड़ी बारीकी से कविताओं की मीमांसा की । श्रीराम तिवारी ने कविताओं को कालजयी बताया और मुकेश वर्मा ने हास्य, व्यंग्य और आक्रामकता के साथ अपने विचार रखे । सक्सेना को छोड़ शेष 6 कवियों ने कविता पाठ किया और वरिष्ठ कवि डॉ. संतोष व्यास ने आभार माना । खचाखच भरे सभागार में कवि, लेखक, पत्रकार, बुद्धिजीवी और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे ।

अकविता पर जमकर बहस

चर्चा के दौरान अकविता पर जमकर बहस हुई । संतोष चौबे ने कहा कि अकविता का समय जा चुका है, अतः पंकज जी का उसकी वापसी का आव्हान तर्कसंगत नहीं है । डॉ. विकास दवे ने भी कहा कि अकविता अब बीते जमाने की बात है । लेकिन पंकज पाठक का कहना था कि वे प्रवृत्तियाँ, विकृतियाँ, विद्रूपताएँ, जुगुप्सा और जिजीविषा आज भी है, जिनके कारण अकविता का जन्म हुआ था । आज भी ऐसी घटनाएँ होती हैं, जो मध्यकाल की याद दिलाती हैं ।

ध्रुपद संस्थान में दूसरे दिन उमाकांत गुंदेचा के ध्रुपद संस्थान में सप्तक के कवियों के अलावा (सक्सेना को छोड़) संतोष चौबे, बलराम गुमाश्ता और डॉ. संगीता गुंदेचा ने कविताएँ सुनाईं । माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. जी. सुरेश मुख्य अतिथि थे । विकास दवे और श्रीराम तिवारी विशेष अतिथि थे । तीसरे दिन कुलाधिपति संतोष चौबे के रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में कविगण को कांता राय, विनय उपाध्याय, मोहन सगोरिया ने अटल इन्क्यूबेशन सेंटर, प्रवासी भारतीय लेखक केंद्र, कला-साहित्य केंद्र, अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र, नाट्य विद्यालय आदि का भ्रमण कराया ।

परिक्रमा

एक-दूसरे पर फब्ती कसते और जीत का दावा करते राजनेता

अरुण पटेल

लोकसभा चुनाव के महायज्ञ में प्रथम चरण में 102 लोकसभा सीटों पर कुल मिलाकर लगभग 62 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग कर उम्मीदवारों के भाग्य को इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन में कैद कर दिया है। इनमें से मध्य प्रदेश की 6 सीटों पर लगभग 67 प्रतिशत से कुछ अधिक मतदान हुआ है। बाकी सीटों पर अब चुनाव प्रचार अपने चरम पर है और राजनेता एक-दूसरे पर फब्ती कसते हुए अपनी-अपनी जीत का गगनचुंबी दावा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए पूरे उत्साह व जोश के साथ विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन पर हमले कर रहा है और उनके दावों को दिवास्वप्न बता रहा है तो वहीं विपक्षी महागठबंधन इंडिया को भरोसा है कि इस बार दिल्ली की सत्ता पर नया चेहरा काबिज होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूरे आत्मविश्वास के साथ तीसरी पारी खेलने के लिए तैयार और प्रतिबद्ध नजर आ रहे हैं। भले ही इंडिया गठबंधन का प्रधानमंत्री चेहरा राहुल गांधी को घोषित नहीं किया गया लेकिन एनडीए और खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के निशाने पर राहुल गांधी ही हैं, क्योंकि राहुल गांधी सघन तूफानी दौरा कर रहे हैं। देखने वाली बात यही होगी कि चुनाव के अंतिम चरण तक यह एक-दूसरे पर किया जा रहा शाब्दिक हमला किस मुकाम पर रुकेगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने त्रिपुरा के अगरतल्ला में चुनावी सभा को सम्बोधित करते हुए कांग्रेस पर तीखा हमला बोला है और आरोप लगाया कि कांग्रेसी पंजा पूर्वोत्तर को लूट रहा था, हमने उसे छुड़ाया है तो वहीं राहुल गांधी खासतौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा जनता पार्टी पर निशाना साधते हुए आरोप लगा रहे हैं कि भाजपा 20-25 अमीरों के लिए ही काम करती है। पीएम मोदी भ्रष्टाचार के मुद्दे पर विपक्षी नेताओं को घेर रहे हैं तो राहुल गांधी कुछ गारंटियों के साथ संविधान की रक्षा और लोगों के दैनंदिनी जीवन से जुड़े सवालों को भी उठा रहे हैं। पूर्वोत्तर के बारे में प्रधानमंत्री का कहना था कि इस इलाके को पंजे ने जकड़ रखा था ताकि लूट और भ्रष्टाचार के दरवाजे खुले रहें, अब यह पंजा खुल गया है हमने कांग्रेस व वामपंथियों की लूट की इस नीति को 10 साल पहले ही खत्म कर दिया है। त्रिपुरा में सीपीएम और कांग्रेस के राज में भ्रष्टाचार खूब फल फूल रहा था, वामपंथियों ने त्रिपुरा को भ्रष्टाचार का अड्डा बना रखा था। अब त्रिपुरा के विकास के लिए भाजपा ने एचआईआरए मॉडल- हाईवे, इंटरनेट-वे, रेलवे और एयरवेज पर काम किया। यहां पर फोरलेन हाइवे का काम भी चल रहा है, एक समय वह था जब यहां कनेक्टीविटी का अभाव था। चुनाव से ठीक पहले प्रधानमंत्री मोदी ने लोकसभा चुनाव लड़ने वाले सभी भाजपा व एनडीए उम्मीदवारों को व्यक्तिगत रुप से पत्र लिखते हुए विश्वास व्यक्त किया कि आप सभी संसद पहुंचेंगे और एक-एक वोट मजबूत सरकार की ओर बढ़ता कदम होगा। उन्होंने यह भी लिखा कि एक टीम के रुप में हम निर्वाचन क्षेत्र के लोगों व क्षेत्र के विकास के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने यह भी उम्मीद जताई है कि तामिलनाडु में भाजपा की जमीनी स्तर पर

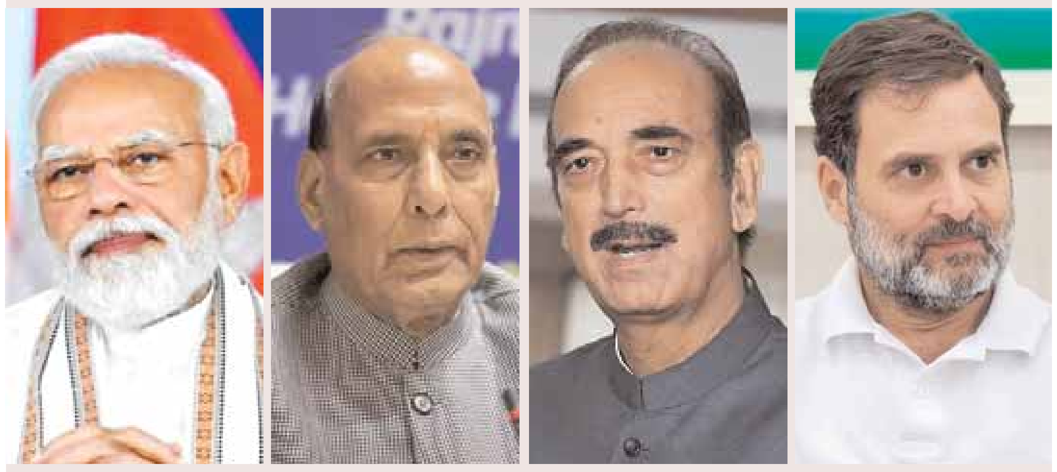

उपस्थिति को कोयम्बटूर लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार कुप्पुस्वामी अन्नामलाई मजबूत करते रहेंगे। चुनाव से ऐन पहले प्रधानमंत्री का यह पत्र निश्चित तौर पर भाजपा व एनडीए उम्मीदवारों में उत्साह का संचार करेगा।

राहुल गांधी और अखिलेश यादव ने गाजियाबाद में चुनाव अभियान के प्रमुख मुद्दों पर मीडिया से खुलकर बात की। राहुल गांधी ने कहा कि इंडिया गठबंधन के पक्ष में मजबूत लहर है और भाजपा 150 सीटों पर सिमट जायेगी। पिछले 10 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी ने नोटबंदी, जीएसटी लागू करके तथा दूसरी ओर अरबपतियों का समर्थन करके रोजगार सृजन हटा दिया है। चुनाव में बेरोजगारी व महंगाई बड़े मुद्दे हैं लेकिन भाजपा इनकी बात नहीं करती। केरल के कुन्नूर में चुनावी सभा में राहुल गांधी ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि सत्तारुढ़ दल देश के लोगों पर एक इतिहास, एक देश, एक भाषा थोपना चाहता है, वहीं कांग्रेस इसी से देश को बचाना चाहती है। राहुल गांधी ने सवाल पूछा कि केरल और तामिलनाडु में आकर आखिर कैसे कोई कह सकता है कि यहां कोई एक भाषा लागू होने वाली है। भाजपा ईडी व सीबीआई को हथियार बनाकर देश के माहौल को बदलना चाहती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और यूडीएफ अनेकता में एकता की बात करते हैं, हम अलग-अलग भाषाओं, अलग-अलग संस्कृति और हमारे लोगों के अलग-अलग इतिहास को स्वीकार करते हैं। राहुल ने आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा देश में अशांति पैदा कर रही है और यह लोकसभा चुनाव आधुनिक भारत के इतिहास में संभवतः पहला ऐसा चुनाव होगा जो कि भारत के संविधान और हमारे लोकतांत्रिक ढांचे के मुद्दे पर होगा। भाजपा आज जो भारत में करने का प्रयास कर रही है वह ऐसी कोशिश है जो आज तक किसी राजनीतिक दल ने नहीं की। संविधान आधुनिक भारत की बुनियाद है, यह हमारे लोगों को समान अधिकार व समान अवसर देता है। उल्लेखनीय है कि केरल में भाजपा और एनडीए अपने लिए उर्वरा जमीन तलाशने का प्रयास कर रहा है, वहां इस समय एलडीएफ की सरकार है और एलडीएफ एवं यूडीएफ दोनों ही इंडिया गठबंधन के हिस्सा हैं, लेकिन पंजाब की तरह यहां चुनावी मुकाबला इंडिया महागठबंधन के सहयोगियों के बीच ही हो रहा है और इनके बीच से ही भाजपा अपनी राह बनाने की कोशिश कर रही है।

राहुल पर गरजते बरसते राजनाथ

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने केरल में प्रचार के दौरान कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर तीखा शाब्दिक हमला बोलते हुए कहा कि ''राहुलयान की न तो लांचिंग हो रही है और न ही वह उचित स्थान पर लैंड कर पा रहे हैं। कई प्रयासों के बाद भी अब तक लांच नहीं हो पाये हैं।'' उन्होंने कहा कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी उत्तरप्रदेश से माइग्रेट होकर केरल चले आये हैं लेकिन इस बार वे वायनाड में भी नहीं जीतेंगे। उनका कहना था कि भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार गगनयान को लांच करने की तैयारी कर रही है और आदित्ययान तो पहले ही सूर्य के नजदीक पहुंच गया है लेकिन दुख की बात यह है कि कई प्रयासों के बाद भी अपने युवा नेता को लांच करने में कांग्रेस को कठिनाई आ रही है। राजनाथ का कहना था कि राहुल गांधी उत्तरप्रदेश से केरल की ओर पलायन करके चले आये हैं और अमेठी से लोकसभा चुनाव लड़ने की हिम्मत नहीं है क्योंकि राहुल गांधी पिछली बार अमेठी से लोकसभा सीट हार गये थे।

और यह भी

कांग्रेस सांसद और इंडिया गठबंधन के बड़े नेता राहुल गांधी पर सबसे तीखा हमला करते हुए कांग्रेस के एक बड़े नेता रहे गुलाम नबी आजाद ने कहा है कि राहुल गांधी चम्मच से दूध पीने वाले बच्चे हैं और वह भाजपा शासित राज्य से चुनाव लड़ने से डर रहे हैं। श्रीनगर में डेमोक्रेटिग प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी -डीपीएपी- के अध्यक्ष गुलाम नबी आजाद ने कांग्रेस के इस दावे का खंडन किया जिसमें कहा गया है कि राहुल बहादुरी से भाजपा का मुकाबला कर रहे हैं। गुलाब नबी आजाद ने कहा कि राहुल भाजपा शासित राज्यों से चुनाव लड़ने से क्यों हिचकिचा रहे हैं ? वह भाजपा से लड़ने का दावा करते हैं, फिर वे भाजपा शासित राज्यों से क्यों भागे तथा अल्पसंख्यक बाहुल्य राज्य में क्यों शरण ली। यह बात आजाद ने ऊधमपुर लोकसभा क्षेत्र में रैली को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने केरल जैसे राज्य में सुरक्षित सीट को प्राथमिकता देने का आरोप लगाते हुए जमीन पर भाजपा से मुकाबले करने की कांग्रेस व राहुल गांधी की प्रतिबद्धता पर सवालिया निशान लगाया। नेहरु गांधी परिवार के करीबी रहे गुलाम नबी आजाद ने राहुल के साथ ही उमर अब्दुल्ला पर भी आरोप लगाया कि ये राजनेता नहीं बल्कि चम्मच से दूध पीने वाले बच्चे हैं। आजाद ने कहा कि राहुल गांधी और उमर अब्दुल्ला ने कोई व्यक्तिगत बलिदान नहीं दिया, वे केवल इंदिरा गांधी और शेख अब्दुल्ला से मिली राजनीतिक विरासत का आनंद ले रहे हैं।

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

इंदौर में बीड़ी पीता हुआ सो गया प्लंबर, जलने से हो गई मौत, श्वान भी जला

इंदौर, एजेंसी। शहर के परदेशीपुरा क्षेत्र में शुक्रवार रात एक प्लंबर की जलने से मौत हो गई। वह बीड़ी पीता था। रात को बीड़ी पीते हुए सो गया था। घटना देर रात कुलकर्णी नगर की है। फायर ब्रिगेड और पुलिस की टीम आग लगने की सूचना पर पहुंची थी। पुलिसकर्मी अंदर घुसे तो प्लंबर दीपक और उसका श्वान जल चुका था। स्वजन ने बताया दीपक नशा और बीड़ी पीता था। संभवत~बीड़ी पीते हुए सो गया और बिस्तर ने आग पकड़ ली। खजराना थाना पुलिस ने बाग-टांडा के बदमाशों को पकड़ा है, जो दोपहिया वाहन चुरा रहे थे। पुलिस ने दो बदमाशों से छह गाड़ियां बरामद की हैं। एसीपी कुंदन मंडलोई के मुताबिक आरोपित दिनेश मेढ़ा निवासी पिपलवा, टांडा और अनिल करमसिंह भूरिया निवासी उंडली (धार) हैं। आरोपित परिचित चौकीदार और गार्ड के पास रुकते थे।

कांग्रेस प्रत्याशी ने कहा हां मैं बलि का बकरा हूं, जो संघर्ष से परिचित नहीं हुआ वो कभी चर्चित नहीं हुआ

इंदौर, एजेंसी। इंदौर में कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ रहे अक्षय कांति बम का एक वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें वे कह रहे हैं कि कई अखबार लिखते हैं कि अक्षय बम को बलि का बकरा बना दिया है। आज मैं कहना चाहता हूं कि हां मैं बलि का बकरा हूं क्योंकि जनता को खुश करने के लिए अगर मेरे गले की बलि भी दे रहे हो तो कोई गलत नहीं है। यह बंदा बलि का बकरा है। यह वीडियो उनके चुनाव कार्यालय के उद्घाटन का है। इस दौरान पार्टी के वरिष्ठ नेता कृपाशंकर शुक्ला, अश्विन जोशी, अर्चना जायसवाल भी मंच पर बैठे थे। अक्षय ने यह भी कहा कि इतिहास गवाह है जो कभी संघर्ष से परिचित नहीं हुआ वह कभी चर्चित नहीं हुआ।

पोस्टर लगाकर बलि का बकरा बताया

कुछ दिन पहले भाजपा नेता राजा कोठारी ने शहर में बैनर और पोस्टर लगवाए थे। इसमें अक्षय का फोटो लगाकर बलि का बकरा लिखा गया था। यह खबर सोशल मीडिया के साथ मीडिया में भी कई जगह आई। इस पर ही अक्षय ने पलटवार करते हुए बयान दिया।

वर्ष के सबसे बड़े मुहूर्त के साथ मतदान की तारीख, मतदाताओं को बूथ तक लाने में करना होगी मशक्कत

इंदौर, एजेंसी। लोकतंत्र के महापर्व पर चौथे चरण के मतदान की तारीख वर्ष के सबसे बड़े मुहूर्त के साथ आ रही है। 10 मई को अक्षय तृतीया पर्व है। इसे सबसे बड़ा अबूझ मुहूर्त भी माना जाता है। ऐसे में वर्ष में सबसे ज्यादा विवाह अक्षय तृतीया के दिन व इसके आसपास ही होते हैं। इंदौर लोकसभा सीट के लिए भी मतदान चौथे चरण में 13 मई को होना है। 9 से 15 मई तक शादियों की भरमार रहेगी। इंदौर में ही इस अवधि में कम से कम तीन हजार विवाह होने का अनुमान लगाया जा रहा है। वैवाहिक उल्लास में डूबे लोगों को मतदान बूथों तक लाने के खासे जतन भी करने होंगे। मई मध्य में तापमान और गर्मी का मिजाज भी तीखा होता है। अब तक दोनों दल ये मान रहे थे कि उनके सामने तपता मौसम ही चुनौती होगा। बीते दिनों से शादियों का दौर शुरू हुआ। इसके बाद अब राजनीतिक दलों का ध्यान अक्षय तृतीया पर गया है। दरअसल, अप्रैल के बाद से स्कूलों में भी छुट्टियां पड़ जाएंगी। मई में अक्षय तृतीय और स्कूलों की छुट्टियों के कारण ज्यादा शादियां होंगी। इसी के चलते विवाह समारोह में हिस्सा लेने के लिए बड़े पैमाने पर लोग एक दूसरे शहर जाएंगे। मतदान की तारीख के आसपास होने वाली शादियां और यात्रा सीधे तौर पर प्रभावित कर सकती हैं। लिहाजा राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता इस बात पर ध्यान लगा रहे हैं कि वे अपने पक्ष के मतदाताओं से संपर्क करें।

इंदौर में इस तरह हुई थी बैंक की शुरुआत

इंदौर स्थित ब्रिटिश रेसीडेंसी तथा रिजेंसी काउंसिल के सदस्यों ने इस बैंक को स्थापित करने में अहम भूमिका अदा की थी

इंदौर, एजेंसी। प्रदेश की आर्थिक राजधानी बन चुके इंदौर में बेशक आज कई बैंक हैं, लेकिन एक दौर ऐसा भी था जब यहां बैंक खोले जाने की कल्पना भी लोगों ने नहीं की थी। इंदौर में वर्ष 1908 में सर्वप्रथम रेसीडेंसी क्षेत्र में बैंक आफ बाम्बे की शाखा शुरू हुई थी। इसी बैंक को शहर में बैंकिंग क्रांति का आरंभ-बिंदु माना जाता है। यह बैंक इंदौर राज्य प्रशासन, ब्रिटिश प्रशासन, स्थानीय बैंकर्स तथा शहर के प्रमुख व्यापारी वर्ग द्वारा जनता के लिए शुरू की गई थी। दरअसल, वर्ष 1920 में इंदौर में उद्योग, व्यापार और व्यवसाय की वृद्धि होने पर उनके लिए अर्थ का प्रबंध करने के लिए एक बैंक की आवश्यकता महसूस की गई।

तब यहां केवल बैंक आफ बाम्बे की शाखा कार्यरत थी। वर्ष 1920 में देश में तीन प्रेसीडेंसी बैंक प्रमुखता से कार्य कर रही थीं- बैंक आफ बंगाल, बैंक आफ बाम्बे तथा बैंक आफ मद्रास। कालांतर में इन तीनों बैंकों का विलय कर इंपीरियल बैंक आफ इंडिया बनाई गई।

1920 में खुली पहली शाखा- वर्ष 1920 में शहर के रेसीडेंसी क्षेत्र में इसकी पहली शाखा खोली गई। बैंक आफ बाम्बे को तब इंपीरियल बैंक आफ इंडिया (वर्तमान जीपीओ शाखा) के रूप में पहचाना जाने लगा। वर्ष 1955 में यह बैंक स्टेट बैंक आफ इंडिया बनकर देश का प्रथम राष्ट्रीयकृत बैंक कहलाया।

23 मार्च 1920 को इंदौर के 11 पंचों ने तत्कालीन इंदौर राज्य के प्रशासन से एक करोड़ की पूंजी के साथ एक बैंक खोलने का अनुरोध किया, जिसे स्वीकृत कर लिया गया। यह 11 पंच एक संस्था के रूप में कार्यरत थे और इनके निर्णय को उच्च व अंतिम माना जाता था। इस अधिकृत पूंजी में इंदौर प्रशासन (होलकर प्रशासन) ने बैंक आफ इंदौर लिमिटेड की शुरुआत की। बैंक के संचालन के लिए यूरोपियन मैनेजर तथा बोर्ड आफ डायरेक्टर की नियुक्ति की गई। पहले बैंक की शाखाओं का क्षेत्र मालवा के प्रमुख कस्बे थे, परंतु मध्य प्रदेश राज्य का गठन होने तथा देश में लोकतंत्र लागू होने के बाद सिंधिया घराने के क्षेत्र में भी शाखाएं खोली गईं।वर्ष 1955 में इंपीरियल बैंक का राष्ट्रीयकरण होकर यह स्टेट बैंक आफ इंडिया बन गया। वर्ष 1959 में स्टेट बैंक आफ इंडिया सब्सीडियरी एक्ट बना और तब इंदौर बैंक भी स्टेट बैंक आफ इंदौर बन गया।

इंदौर एयरपोर्ट पर डीजी यात्रा का अलग रहेगा प्रवेश द्वार, तीन स्थानों पर लगेंगे फेस स्केनर

मई में ट्रायल के बाद जून से शुरू होगी डीजी यात्रा

इंदौर, एजेंसी। देवी अहिल्याबाई होलकर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर यात्री सुविधाओं के तहत डीजी यात्रा की शुरुआत होने जा रही हैं। मशीनों को लगाने का काम शुरू हो चुका है। डीजी यात्रा का प्रवेश द्वार अलग रहेगा, वही तीन स्थानों पर चेहरा स्केनर मशीनें लगेगी। इसके संचालन के लिए अलग से कर्मचारी तैनात होंगे। मई में ट्रायल कर जून से डीजी यात्रा शुरू हो जाएगी। इसके बाद यात्रियों को चेहरा दिखकर प्रवेश मिलेगा, दस्तावेज की कापी दिखने की आवश्यकता नहीं होगी। इंदौर एयरपोर्ट उन चुनिंदा एयरपोर्ट में सुमार होने वाला है, जहां पर चेहरा दिखाकर प्रवेश मिलेगा। डीजी यात्रा की तैयारी के तहत मशीनों को लगाने का काम शुरू हो चुका है। प्रवेश द्वार, सिक्योरिटी चेकिंग और बोर्डिंग एरिया में तीन चेहरा स्केनर मशीने लगेगी। तीनो स्थानों पर चेहरा स्केन कर यात्री बिना किसी देरी के आगे जा सकेंगे। यात्रियों को दस्तावेज दिखाने की आवश्यकता नहीं होगी। मई-जून में यात्रा के शुरू होने के बाद यात्री पेपरलेस यात्रा कर सकेंगे। इससे दस्तावेज की जांच में लगने वाला अतिरिक्त समय बचेगा। इसके लिए यात्रियों को मोबाइल में डिजीयात्रा एप डाउनलोड करना होगा। उसका चेहरा स्कैन करते ही टर्मिनल में प्रवेश मिल जाएगा। एयरपोर्ट पर डीजी यात्रा के स्कैनर लगाए जा रहे हैं। इसके संचालन के लिए मेन पावर की आवश्यकता होगी। जिसके टेंडर किए जा चुके है। मशीने लगाने के बाद मई में कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण में संचालन की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी जाएगी।

डीजी यात्रा ऐसे करेगी काम

डीजी यात्रा हवाई यात्रियों के प्रवेश को परेशानी मुक्त बनाने के लिए शुरू की गई है। चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग किया जाएगा। यात्रियों को मोबाइल ऐप डाउनलोड कर अपना आधार कार्ड, पासपोर्ट, ड्रायविंग लायसेंस जैसी आवश्यक जानकारी दर्ज करनी होगी।

शादी के तीन साल बाद ही तीन तलाक, दो साल के बेटे के साथ थाने पहुंची पत्नी

इंदौर, एजेंसी। 21 वर्षीय युवती ने अपने पति, सास और जेठ के विरुद्ध रिपोर्ट लिखवाई है। आरोपित पति ने डेढ़ लाख रुपये न देने पर उसे तीन तलाक दे दिया। शुक्रवार को थाने पहुंची और रोते हुए तीनों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज करवाई। उसकी तीन साल पूर्व ही शादी हुई थी और दो साल का बेटा है।

खजराना पुलिस के मुताबिक, घटना जल्ला कालोनी की उस्मानी मस्जिद के समीप की है। इकरा बी ने पति मोहम्मद सरताज, सास सायरा बी और जेठ शाहरुख के विरुद्ध शिकायत की। इकरा की तीन साल पूर्व सरताज से शादी हुई थी। वह डेढ़ लाख रुपये मांग रहा था। इकरा से माता-पिता से संबंध तोड़ने का बोलता था।

उसने ऐसा करने से मना कर दिया था। सरताज ने उसके स्वजन के सामने ही तीन बार तलाक, तलाक, तलाक बोला और घर से निकाल दिया। इकरा शुक्रवार को थाने पहुंची और फूट-फूट कर रोई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव से आरोपितों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की। इकरा के मुताबिक, सरताज शराब, गांजा और पावडर का नशा करता है। घर टूटने के डर से सहनकर रही थी।

अगले सत्र से नए दस यूजी-सात पीजी कोर्स होंगे शुरू, कालेजों में बढ़ी सीटें

इंदौर, एजेंसी। 2024-25 सत्र को लेकर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के दायरे में आने वाले कालेजों में नए कोर्स शुरू होंगे। ये कोर्स सरकारी और निजी कालेजों में संचालित किए जाएंगे, जिसमें दस स्नातक और सात स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है। 17 नए पाठ्यक्रम में एक हजार से ज्यादा सीटें रखी गई है। विश्वविद्यालय की तरफ से इन कालेजों को नए पाठ्यक्रम के संबंध में संबद्धता जारी हो चुकी है। अब इन पाठ्यक्रम व सीट संख्या के बारे में ई-प्रवेश पोर्टल पर डाटा अपलोड किया जाएगा। यह काम मई से पहले पूरा किया जाना है। उधर प्रवेश प्रक्रिया से पहले विश्वविद्यालय को संबद्धता प्राप्त कालेजों की सूची भेजना है। डीएवीवी के दायरे में आने वाले 80 कालेज 2024-25 सत्र से खरगोन स्थित टाट्या मामा विश्वविद्यालय में शामिल हो चुके है।

दिल्ली को सिर्फ मोहन प्यारे हैं...

मोहन यादव अभी नए हैं, हर कोई उनसे अपनी नजदीकी दिखाना चाहता या बढ़ाना चाहता है

इंदौर, एजेंसी। जब शिवराज सिंह चौहान प्रदेश के मुखिया हुआ करते थे और वे ट्रांजिट विजिट पर इंदौर आते थे, तो एयरपोर्ट पर वैसा मजमा नहीं जमता था जैसा इन दिनों मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के आने पर जमता है। इस मजमे के जमने के कई कारण हैं। शिवराज को प्रदेश का नेतृत्व करते हुए लंबा समय हो गया था, वे इंदौर की सियासत को बारीकी से समझते थे। इंदौर के नेताओं को भी पता था कि शिवराज इंदौर में किसे अपना मानते हैं। मोहन यादव अभी नए हैं, हर कोई उनसे अपनी नजदीकी दिखाना चाहता या बढ़ाना चाहता है। इसके अलावा सबको पता है कि

दिल्ली को सिर्फ मोहन प्यारे हैं, इसलिए उनसे दूरी भारी पड़ सकती है। यही वजह है कि दो नंबरियों, चार नंबरियों से लेकर सांसद, मंत्री, महापौर सभी मोहन प्यारे के आने की खबर मिलते ही एयरपोर्ट पहुंचने में किसी भी तरह की देरी नहीं करते हैं।

अब कमल नाथ समर्थकों में ही दिख रही जंग- कांग्रेस की गुटबाजी किसी से छिपी नहीं है। यहां कमल नाथ से लेकर अरुण यादव तक कई गुट सक्रिय हैं। अलग-अलग गुटों के नेताओं की भिड़ंत के चर्चे तो अक्सर सामने आते ही रहते हैं, मगर अब कमल नाथ गुट के नेताओं में भिड़ंत भी चर्चा में आने लगी है। पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा और कांग्रेस नेता गजेंद्र वर्मा दोनों ही कमल नाथ के खास समर्थक माने जाते हैं। पिछले दिनों इंटरनेट मीडिया पर दोनों की आपसी खींचतान खूब प्रसारित हुई। कांग्रेस उम्मीदवार अक्षय बंम के कार्यालय के उद्घाटन समारोह में बतौर अतिथि सज्जन सिंह वर्मा को बुलाया गया था। यह बात गजेंद्र वर्मा को नागवार गुजरी। उन्होंने लोकसभा प्रभारी विपिन वानखेड़े और नगर कांग्रेस अध्यक्ष सुरजीत चड्ढा को खूब खरी-खोटी सुनाई। गजेंद्र वर्मा का आरोप है कि सज्जन सिंह वर्मा ने कभी भी इंदौर की राजनीति नहीं की, वे हमेशा सोनकच्छ और देवास में ही सक्रिय रहे हैं। ऐसे नेता को तवज्जो देना इंदौर के नेताओं का अपमान है।

आयोजनों को लेकर भी दिख रही प्रतिस्पर्धा

श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति को इंदौर में साहित्य जगत की सबसे पुरानी समिति माना जाता है। इसकी प्रतिष्ठा पूरे देश के साहित्य जगत में मानी जाती है। किंतु पिछले दिनों समिति के प्रधानमंत्री पद के चुनाव को लेकर जिस प्रकार की रस्साकशी दिखी, उससे समिति की गुटबाजी चर्चा में आ गई।

चुनाव के बाद से जारी यह रस्साकशी और प्रतिस्पर्धा अब भी नजर आ रही है। समिति पदाधिकारियों के बीच यहां जमकर राजनीति चलती रहती है। समिति के आयोजन भले ही एक बैनर तले होते हों, पर इनके संयोजक अलग-अलग पदाधिकारी होते हैं। अब हर कोई अपने आयोजन को सफल बनाने के लिए दूसरे के कार्यक्रम को कमजोर करने पर तुला नजर आता है। इसी खींचतान के चलते आम दर्शक या श्रोता समिति के आयोजनों से कन्नी काटने लगे हैं। एक समय यहां के आयोजनों में सभागृह खचाखच भरा रहता था, अब गिनती के लोग नजर आते हैं।

सफल होने और सफलता की कहानी अलग ही दिखती है

दृष्टिकोण
विवेक कुमार मिश्र
लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

सफल होने की कहानी ही अलग और अनूठी होती है। कुछ ऐसा होता है कि यह बराबर से लगता है कि यह आदमी जरुर सफल होगा। इस आदमी के कार्य करने का तरीका एकदम से अलग हटकर है। जो सब सोचते हैं वह यह नहीं सोचता न ही सबकी तरह से सोचता पर दिखता सबकी तरह ही है और सबसे अलग हो जाता है अपने कार्य से, अपनी उर्जा से, अपने भीतर के अस्तित्व बोध से और लगातार इस तरह सोचते हुए कि यह सब मुझे ही तो करना है और धीरे धीरे कर जाता है इतना कुछ कि बस एक दूरी से आप देखते रहिए कि अरे ! यह तो हमारे बीच ही था, हमारे आसपास ही था और हमें तो पता ही नहीं चला कि इतना कुछ किया जा सकता है। इतना बड़ा कार्य किया जा सकता है। इस तरह सफल होने की और सफलता की कहानी अलग ही दिखती है। यह कार्य करने की स्थिति और दुनिया अलग ही होती है और अपने ढ़ंग की होती है इसलिए यह कभी नहीं कहा जा सकता है कि सफलता का यहीं सूत्र है और इसे अपनाकर आप सफल ही हो जायेंगे। हां हर सफलता की कहानी आपको जीने का, रास्ता दिखाती है एक पथ बनाते हुए चलती है कि इस पर चलेंगे तो कम से कम यहां तक पहुंच ही जायेंगे पर इससे आगे का रास्ता आपको खुद तय करना पड़ता है और यहीं से सफलता का मीटर अलग से चल पड़ता है जो हर आदमी का अपना ही होता है। यहां से सफलता की गाथा, सफलता की कहानी सुनी और सुनाई जाती है, यहां से परिणाम बोलता है। सफल आदमी का रिजल्ट बोलता है। इसके पीछे वह कहां है क्या कर रहा था, उसका संघर्ष कहां है और किन स्थितियों से निकल कर आया है इसे देखने की जगह लोगबाग बस रिजल्ट लेकर भागते रहते हैं...और भागते भागते सफलता की कहानियां सुनते सुनाते हैं। सफलता का कोई एक पैमाना नहीं होता, न ही एक ढ़ंग से सफलता अर्जित की जा सकती है। सफलता के मायने भी सबके लिए अलग अलग होते हैं। कोई जरुरी नहीं है कि जिसे कोई एक सफल होने का रूप मानता हों उसे ही सभी माने न ही जिस रास्ते चल कोई एक सफल हो गया तो वहीं सभी के लिए रास्ता या पथ प्रदर्शक हो जाएं। सफलता की गाथा को कुछ सूत्र व कुछ बिंदु से समझने की कोशिश करते हैं जिसे बिंदु रूप में यों रखा जा सकता है।

1.सफलता कठोर परिश्रम मांगती है। अपनी दिशा तय कर उस पर कार्य करें। कोई भी आसान रास्ता नहीं होता। लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अपनी पूरी क्षमता लगानी होती है।

2. प्रतिभा के बिना किसी भी सफलता का स्वाद नहीं चखा जा सकता है। जो भी सफल है या सफल होने की राह पर है उसमें एक बात तो तय है कि प्रतिभा कूट कूट कर भरी होती है। अपने लक्ष्य के लिए हर तरह का त्याग करने के लिए तत्पर होते हैं। लक्ष्य से बड़ा कुछ नहीं है।

3. निर्णय लेने की क्षमता ही आदमी को सफल बनाती है। एक जगह चुप मारकर बैठ जाने से कोई सफल नहीं होता है। सफलता के लिए जरूरी है कि आवश्यक समय पर सही ढ़ंग से आप अपने बारे में निर्णय कर सकें।

4. जोखिम उठाने की क्षमता भी सफलता के राह का एक पड़ाव है। कई सारे लोग न कोई निर्णय लेते हैं न जोखिम लेते हैं। बस पड़े रहते हैं। पड़े रहिए अपने सुरक्षित घेरे में, अपनी खोल में, घोंघा अपनी खोल में पड़ा रहता है और वहीं से जीवन की जरूरतें पूरा कर फिर अपनी खोल में चला जाता है। वह कहीं भी जाएं किसी भी स्थिति में क्यों न हो अपनी खोल से निकलता ही नहीं ऐसे में किसी भी वाह्य शक्ति का कोई भी असर उस पर नहीं होता। बस आप पड़े रहिए। आपका कुछ नहीं हो सकता न ही आप कुछ खास कर सकते। आपसे सफलता भी एक दूरी पर रहती है। आपकी सुरक्षा बनी रहती है। बहुत सारे लोग ऐसे होते हैं जो सफलता के पथ पर होते हुए भी सफल नहीं होते क्योंकि किसी तरह का जोखिम लेना नहीं चाहते। बिना जोखिम के जीना चाहते हैं। अब यह तो तय है कि जोखिम नहीं लेंगे तो अपनी स्थिति में अपनी तरह पड़े रहिए।

5. अपनी छोटी छोटी उपलब्धियों को जीना, अपनी खुशियों को जीना, उससे उर्जा प्राप्त करना और आगे बढ़ते रहने की इच्छा और कर्म शक्ति ही आगे से आगे लेकर चलती है। अपनी खुशी को अन्य के बीच बांटिए।खुश होने के दर्शन को बांटिए।

6. स्वयं पर भरोसा रखना, आगे बढ़ते रहने की शक्ति और अपनी जीजिविषा पर भरोसा रखना ही पड़ता है। कोई भी कार्य क्यों न हो उसे स्वस्थ व सकारात्मक भाव से करते रहे।

7. एक सकारात्मक सोच की रचना अपनी उपस्थिति के साथ ही कर दें। आपके होने का अर्थ ही है कि यह काम हो जायेगा। कोई भी कार्य कठिन नहीं है। यह आपकी सोच पर निर्भर करता है।

8. निर्भय होकर कार्य करें। हर तरह के भय से दूर होकर कार्य करें। जो कार्य करता है उसे सफलता और सार्थकता दोनों ही मिलती है।

9.किसी भी कार्य की शुरुआत महत्वपूर्ण होती है। जब भी किसी नये कार्य की शुरुआत करें तो उत्साह और उर्जा के साथ करें। यदि उर्जा से कार्य करते हैं तो सफलता अवश्य मिलेगी। हर हाल में अपने को सफल बनाने के लिए कार्य करें। असफलताओं को किनारे पर छोड़ आगे की ओर बढ़ें। रुकें नहीं, कहीं भी ठहर न जाएं बस अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ें।

10. समाज केवल सफलता देखता है। यदि आप सफल हैं तो लोग आपके साथ खड़े हो जायेंगे। हर असफलता सीखने का रास्ता लेकर आती है। आपको तय करना होगा कि हम यदि यहां हैं तो क्यों हैं ? क्यों नहीं हम वहां जा सकते जो हमारे ही साथ के हमारी ही तरह के लोग चलें गये। अपने लक्ष्य के अनुरूप मेहनत करें। सही दिशा में अपनी क्षमता और प्रतिभा को पहचानते हुए मेहनत करें।

कभी भी यह न सोचें कि यह मैं नहीं कर पाऊंगा। या इस कार्य के लिए मैं नहीं बना हूं। यदि कोई भी आदमी इस कार्य को कर सकता है तो सबसे पहले मैं करुंगा। यह भाव ही आदमी को आगे लेकर जाता है।

अपनी गति को अपनी शक्ति को और अपनी सामर्थ्य को पहचाने और उस पर चलें। यदि आप ऐसा करते हैं तो तय मानिए कि सफलता मिलेगी। सफलता के लिए कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है। सफलता अपनी दुनिया और अपने आसपास से ही शुरू होती है। सफल होने के लिए रिस्क लेने की जरूरत होती है। केवल सुविधा की खोल में बैठकर सफलता का सपना देखने से काम चलने वाला नहीं है। आपकों लगातार आगे आने के लिए चलना पड़ता है। सफलता कहीं बाहर या बहुत दूर नहीं है वह हमारे पास ही होती है बस जरूरत होती है तो उसे अलग से पहचान कर चलने की है। जब मनुष्य के रूप में आप सफलता को पहचान लेते हैं और उस राह पर चलने के लिए तत्पर होते हैं जिससे सफलता मिलती है।

कविता

अनाहूत

संदीप भटनागर

तुम आईं
अनाहूत अतिथि की तरह
आईं तो चली भी जातीं
गुजरते दिनों की तरह

आने की आहट
धमक में बदल कर
न जाने
क्या-क्या ले गई

तुम्हारा आने का
कौन सा मोल न चुकाया
कुछ रिश्ते गँवाए
कुछ अपने परखे

पल हो गये घंटों सम
दिन हो गये बरसों सम
काटने को कुछ नहीं
कटता भी कुछ नहीं

सूरज अब भी उगता होगा
आसमां भी रंग बदलता होगा
चाँद निशा संग गपियाता होगा
दिवारों के उस पार

अब कोई आता नहीं बतियाने
न सुनने, न सुनाने
खुद भी चुप हो गया
खुद से

देह तो है
पर प्राण नहीं
सांस तो है
पर आस नहीं

जो बचे थे
संग साथ
उन्होंने भी तो अब
छोड़ दी है आस

आस की डोर
बस मैं ही पकड़े बैठी हूँ
शायद साथ ले चलो
गुमनाम की तरह।

सृजनशील व्यक्ति को बार-बार आना चाहिए

पुस्तक समीक्षा
दिनेश दिनकर
समीक्षक

दस पुस्तकों के पन्नों पर कलम और चित्रकारी के हजारों पन्नों पर रंग की कूची चलाने वाले सृजनशील व्यक्ति लक्ष्मीनारायण पांचाल जी अपनी आत्मकथा के रूप में ग्यारहवीं पुस्तक 'मैं फिर आऊंगा' के साथ पाठकों के समक्ष उपस्थित हैं। उम्र और सृजन क्षेत्र में छह दशक बिता चुके वरिष्ठ कवि, लेखक और कला अध्यापक रहे पांचाल जी अपने अनुभवों को निचोड़ते हुए एक सार्थक आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत करने में निश्चित रूप से सफल रहे हैं। पुस्तक में दस अध्यायों में अपने बचपन से लेकर पुस्तक छपने तक के निजी जीवन, शैक्षणिक जीवन, परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने अनुभवों, दायित्वों, विचारों और अनुमानों को बेहद शालीनता के साथ यहां क्रमबद्ध किया गया है। पुस्तक में वरिष्ठ लेखक ने अपनी उपलब्धियों और अच्छाइयों के साथ-साथ एक कुशल सृजनशील का परिचय देते हुए अपनी कमियों और समाज में सुधारों की ओर भी अपनी कलम को आजाद रखा है।

'मैं फिर आऊंगा' आत्मकथा में 70-80 के दशक की जीवनशैली से अनभिज्ञ पाठक जब लक्ष्मीनारायण जी की दिनचर्या को पढ़ते हैं, पुस्तक में संकलित इनकी यात्रा वृत्तांत को पढ़ते हुए इसमें शामिल होते हैं तो लगता है मानो सामने कोई चलचित्र चल रहा हो। इस बात का जिक्र आत्मकथा में लेखक की पोती अवन्तिका भी करती रहती है। यहां शब्दों के चयन, उनको क्रमबद्ध करने की शैली और बेहतरीन प्रस्तुतिकरण के लिए लेखक के साहित्यिक अनुभव की तारीफ करना एक कृतज्ञता लगता है।

जवाहर नवोदय विद्यालय में कला अध्यापक के पद पर रहते हुए लेखक को भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में पोस्टिंग, अलग-अलग तरह के विचारों के विद्यार्थियों, शिक्षकों और लोगों से मिलने का अवसर मिलता रहा है। जिसके परिणामस्वरूप यहां आत्मकथा में घटनाओं, अनुभवों और उपलब्धियों में अधिकता देखने को मिलती है। निश्चित रूप से जवाहर नवोदय विद्यालय से संबंध रखने वाले लाखों विद्यार्थी और स्टाफ के साथ कला और साहित्य प्रेमियों के लिए यह पुस्तक एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में अपनी पहचान बनाएगी।

यहां कहना अतिश्योक्ति होगा कि निजी जीवन, परिवार, समाज, शिक्षा, देश की संस्कृति, तकनीक, पारिवारिक संस्कार और एक नागरिक होने के प्रति जिम्मेदारी इत्यादि को लेकर सच्चाई से परिचय करवाते हुए रेखांकित घटनाओं में काल्पनिकता का अभाव है जिससे पाठक इस आत्मकथा और यात्रा वृत्तांत से अपनापन महसूस करेंगे। आत्मकथा के दस अध्यायों में संदेश, रोचकता, प्रेम, संस्कार, जागरूकता, जिम्मेदारी और विवेचना विद्यमान हैं।

पुस्तक-मैं फिर आऊंगा
लेखक- लक्ष्मीनारायण पांचाल
प्रकाशन- सुलेखा प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य- 200 रुपए

रोको मत चलने दो

व्यंग्य
केदार शर्मा 'निरीह'

सतरह वर्ष के नत्थू को वोट देने की धुन सवार हो गयी। सरकार द्वारा चलाए जा रहे स?वीप कार्यक्रम रूपी जोत को देखने से यह भाव और भी भरता गया !''भैया मैं तो वोट खिलौना लैहों '' भैया दुधारी लाल ने चेताया–'देख नत्थू तेरा नाम वोटर लिस्ट में नहीं है,इसलिए तू वोटिंग नहीं कर सकता ''। नत्थू ने कहा-'मेरा नाम न सही,मेरे भाई सत्तू का नाम तो मतदाता सूची में है ना ! वह कमाने बाहर गया हुआ है।मतदान के दिन वह इतनी दूर से आएगा भी नहीं। उसकी जगह मैं वोट दूंगा। सोचने की बात है, भाई की जगह भाई ही वोट नहीं देगा तो कौन देगा ?'और ससुरे रोज-रोज तो चुनाव होते नहीं।फिर पाँच साल तक भाड़ झौंकों। न न भैया रोको मत चलने दो।

जब नहीं माना तो दुधारी ने फिर समझाया -''देख ले,तू खुद की रिस्क पर ही वोट दे सकता है। पकड़ में आ गया तो सीधी जेल है। खतरनाक यह खेल है।

अब नहीं ही मानता तो सुन ।मतदान कक्ष में आत्मविश्वास के साथा जाना। अपने आपको सत्तू बताना।भूल जाना कि तू नत्थू है।समझ लेना मर गया नत्थू तेरे लिए। पहचान पत्र हो सत्तू का,चाल-ढाल सत्तू की, हाँ भले ही खाल नत्थू की हो, पर खाल के ऊपर खोला सत्तू का ओढ़े रखना।

आखिर नत्थू कुछ आश्वस्त हुआ। दुधारी ने समझाना शुरू किया-'नत्थू मंत्र तो हम पढ़ लेंगे पर मतदान कक्ष की बांबी में हाथ तो तुम्हें ही डालना पड़ेगा।वैसे बांबी में बैठे सर्प देवता डसने की रिस्क इतनी आसानी से नहीं लेते,थोड़ा बहुत अनदेखा भी करते ही होंगे ताकि जैसे-तैसे बस उनका यह समय निकल जाए।इसलिए तू इतनी ही चिंता कर कि जैसे-तैसे तेरा वह समय निकल जाए।

आखिरकार मतदान का दिन भी आ पहुंचा।नत्थू बूथ पर झटपट गया ।जाकर लाइन में डट गया।मतदाताओ का विशाल मेला था। चुनावी खेला था।पीठासीन जी कह रहे थे- 'मतदान प्रक्रिया रोको मत चलने दो' नत्थू ने प्रथम अधिकारीजी को अपनी वोटर स्लिप सौपी।प्रथमजी ने जोर से नाम पुकारा-सत्तू सिंह....।नत्थू का दिल जोर-जोर से धड़क रहा था।हालाकि आँख दाहिनी फड़क रही थी। प्रथमजी ने पहचान पत्र को सरसरी नजर से देखा। फिर गौर से पीछे बैठे एजेंटों से नजर मिलाई, यह जानने के लिए कि सामने खड़ा बंदा सही है या गलत। दुधारी लाल ने कहा- रोको मत चलने दो। नत्थू अंगुली में स्याही लगवाकर जल्दी से दूसरे,तीसरे और चौथे अधिकारी के सामने से सरपट गुजर गया ।मशीन का बटन दबाकर जल्दी से बाहर निकल गया और एक जगह बैठकर दिल की धड़कनों को काबू में करने लगा।

शाम को नत्थू ने दुधारी लाल को घर जाकर धन्यवाद ज्ञापित किया और हाथ जोड़कर कहा–तुम्हारा मंत्र पक्का था-'रोको मत चलने दो।' इसीलिए बांबी में हाथ डालकर भी मैं सुरक्षित चला आया।

दुधारी लाल ने कहा-भइए ! यह मंत्र तब तक ही काम करेगा जब तक मतदाता की पहचान के लिए अंगूठा या आँखों की पुतली से स्केन करने का सिस्टम नहीं बन जाता। इसके बाद हम कितना ही कहें -'रोको मत, चलने दो।' पर वह स्केनिंग मशीन कहेगी 'रोको, मत चलने दो।'

झूठा दंभ

कहानी
सतीश सिंह
लेखक बैंकर, वरिष्ठ स्तंभकार, कथाकार, कवि और शायर हैं।

हमेशा की तरह सुकेश मुंबई के नरीमन पॉइंट स्थित अपने ऑफिस 11.15 बजे पहुंचा, जबकि ऑफिस पहुँचने का समय 10.45 बजे था। रोज विलंब से ऑफिस पहुँचने के कारण बॉस, सुकेश से नाराज रहते थे, लेकिन सुकेश, बॉस के निर्देशों को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता था।

महानगर होने की वजह से यहाँ ऑफिस पहुँचने का समय दूसरे शहरों से अलग था, क्योंकि मुंबई में 10 बजे सभी के लिए ऑफिस पहुँचना संभव नहीं था। नरीमन पॉइंट के आसपास निम्न व मध्यम वर्ग के लोगों के लिए किराये से या खुद के मकान में रहना असंभव था। इसलिए, अपनी सैलरी के हिसाब से कोई कर्मचारी विरार रहता था तो कोई खारगर।

अमूमन, सुकेश ऑफिस पहुँचते ही चाय पीता था, उसके डेस्क के सामने ही चाय-कॉफी की मशीन लगी हुई थी। वह चाय की चुस्की ले ही रहा था, तभी एचआर का मसेंजर डाक रिसीव करने वाले कलर्क से बोला, ÷विभाग में सुकेश सर कहाँ बैठते हैं?, उन्हें चिट्ठी देनी है÷। सुकेश अपना नाम सुनकर बोला, ÷मैं ही सुकेश हूँ, दे दो चिट्ठी÷।

चिट्ठी पढ़ते ही सुकेश के होश उड़ गये, क्योंकि उसे बैंक की सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था और उसकी बर्खास्तगी आज से ही प्रभावी थी। कारण था 5 सालों से वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में लगातार ÷सी÷ ग्रेड दिया जाना।

बॉस इस हद तक चला जायेगा, सुकेश को उम्मीद नहीं थी। बॉस के खिलाफ सुकेश कुछ भी नहीं कर सकता था, फिर भी, उसके मन में बॉस के प्रति नफरत और क्रोध की चिंगारी भड़कने लगी। सुकेश, बॉस पर अपशब्दों की लगातार फाइरिंग कर रहा था। जब इससे भी मन नहीं भरा तो उसने बॉस को 2 थप्पड़ जड़ दिया। जब शोरगुल बढ़ गया तो विमल भी चेंबर के अंदर आ गया। विभाग में एचआर विमल ही देखता था।

विमल ने बॉस और सुकेश को शांत करवाने की पुरजोर कोशिश की, लेकिन वह कामयाब नहीं हो सका। सुकेश का चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। चिल्लाने के कारण वह खाँसने भी लगा था, फिर भी, वह लगातार बोले जा रहा था, उसके गले के नस तने हुए थे और मुंह से थूक लगातार निकल रहे थे। चूंकि, उसके पास अब खोने के लिए कुछ भी नहीं था, इसलिए, वह बहुत ज्यादा आक्रामक हो गया था।

अंत में बॉस को सिक्योरिटी ऑफिसर को बुलाना पड़ा। उसके हस्तक्षेप के बाद भी सुकेश बड़ी मुश्किल से चेंबर से बाहर आया, लेकिन बॉस को मार दूंगा, किसी को नहीं छोड़ूँगा, कोर्ट जाऊँगा आदि उसके द्वारा बड़बड़ाना जारी रहा। जब ऊर्जा खत्म हो गई और हलक प्यास से सूखने लगा तो हताशा और निराशा की मनन्स्थिति में वह अपनी सीट पर बैठकर पानी पीने लगा। हालांकि, मन के अस्थिर होने की वजह से वह अपने सिर के बालों पर बार-बार उंगलियां फिरा रहा था साथ ही साथ चेहरे को दोनों हथेलियों से हल्का-हल्का दबा भी रहा था।

कुछ देर सुकेश शांत रहा, फिर अचानक से वह विमल से उलझ गया। विमल शांत रहा, चुपचाप सुकेश का अनर्गल प्रलाप सुनता रहा, जब सुकेश की चिल्लाने की तीव्रता कम हुई तो विमल बोला, ÷भाई, तुम अर्थशास्त्री हो, खुद को विद्वान मानते हो और आज कह रहे हो कि तुम्हें यह नियम पता नहीं था, तुम्हारे इस तर्क को कौन मानेगा, किसी को लगातार 5 बार वार्षिक रिपोर्ट में ÷सी÷ ग्रेड मिलने पर उसे नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाता है, यह तुम्हें अच्छी तरह से पता है, मैं विगत 3 सालों से इस खतरे के बारे में तुम्हें बता रहा हूँ, पिछले साल बॉस से माफी मांगने के लिए भी मैंने तुमसे कहा था, मैंने यह भी कहा था कि बड़ी मछली हमेशा छोटी मछली को खा जाती है, फिर भी, तुम अड़ियल टट्टू बने रहे, जब विमल का स्वर तल्ख और तेज हुआ तो सुकेश के जुबान पर ताला लग गया।

विमल की बातों को सुनने के बाद भी सुकेश का मन और भी अशांत हो गया। कुछ देर तक सामने की वीआईपी लिफ्ट की तरफ निर्लिप्त भाव से एकटक ताकता रहा, फिर, अचानक से उठकर डीजीएम लॉ से इस उम्मीद में मिलने चला गया, ताकि उसे उसकी समस्या का कोई समाधान मिल सके।

डीजीएम लॉ ने कहा, बैंक में वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट की ग्रेडिंग के आधार पर बर्खास्त करने के प्रावधान को 2015 में लागू किया गया था, लेकिन यह अपवाद जैसा है, क्योंकि इसके पहले कभी इस वजह से बैंक की सेवा से किसी को बर्खास्त नहीं किया गया है, चूँकि, इस प्रावधान को अधिकारी संवर्ग की सेवा शर्तों में शामिल किया जा चुका है, इसलिए, अदालत में तुम इस केस को शायद ही जीत पाओगे।

डीजीएम लॉ के यहाँ से लौटते समय सुकेश के कदमों में भारीपन को देखते ही विमल समझ गया कि बात नहीं बनी। विमल मन ही मन सोच रहा था, कितना वेबकूफ और घमंडी है सुकेश? अर्थशास्त्री है, खुद को विद्वान समझता है, पढ़ाई-लिखाई विदेश से की है, फिर भी, उसकी अक्ल हमेशा घास खाने गई हुई होती है, इतना अकड़ू है कि कभी भी सीधे मुँह बात नहीं करता है। बॉस और सुकेश के बीच मनमुटाव का कारण सिर्फ अहम है। मैं, म और सिर्फ मैं सुकेश की बर्खास्तगी का मूल कारण है।

सुकेश का पिछले 5 सालों से बॉस के साथ खटपट चल रहा था, पहले बॉस का रोज सुकेश से बकझक होता था, लेकिन जैसे ही बॉस को पता चला कि अगर किसी भी कर्मचारी को वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में लगातार 5 सालों तक 'सी' ग्रेड दी जाये तो बैंक उसे सेवा से बर्खास्त कर देता है। तदुपरांत, बॉस ने सुकेश के साथ बहस करना बंद कर दिया और उसे हर साल 'सी' ग्रेडिंग देनी शुरू की। चूंकि, समीक्षा पदाधिकारी के साथ बॉस हमेशा तालमेल बनाकर रखते थे, इसलिए बॉस की दी हुई ग्रेडिंग को समीक्षा पदाधिकारी भी हमेशा यथावत रखते थे।

बर्खास्तगी के बाद सुकेश को गृह एवं कार ऋण तत्काल प्रभाव से बंद करना होगा या फिर दूसरी नौकरी करनी होगी, ताकि वह हर महीने घर और कार की किस्त और ब्याज जमा कर सके। अभी वह बैंक द्वारा आवंटित मकान में रहता है, उसे भी उसे तुरंत खाली करना पड़ेगा, फर्नीचर-फिक्सचर की कीमत भी उसे बैंक को तुरंत चुकानी होगी। पत्नी, हाउस वाइफ़ है, बेटा भी 3 महीने का है, तुरंत नौकरी मिलना इतना आसान नहीं होगा, क्योंकि निजी और सरकारी नौकरी की कार्य संस्कृति में जमीन-आसमान का अंतर होता है। साथ में, अब उसपर बर्खास्तगी का कलंक भी लग चुका है।

इंसान जानता है, इस दुनिया में किसी की कोई औकात नहीं, सभी रंगमंच के पात्र हैं और एक दिन सभी को अपनी भूमिका अदा करके इस दुनिया से रुखसत होना है, कोई यहाँ अमर बनकर नहीं आया है। बावजूद इसके, सुकेश ने सिर्फ अपने झूठे दंभ को पोषित करने के चक्कर में अपने परिवार को सड़क पर लेकर आ गया। यह सब सोचते-सोचते विमल का मन बोझिल सा हो गया।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महावीर जयंती

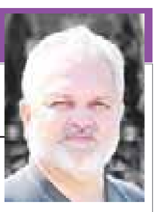

राजकुमार जैन

स्वतंत्र विचारक और लेखक

महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के सिद्धान्त

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् दुनिया की सभी आत्माओं का स्वरूप एक है, अतः हम दूसरों के प्रति वही विचार एवं व्यवहार रखें, जो हमें स्वयं के लिए पसन्द हो।

संसार जाति, धर्म, भाषा, राष्ट्रीयता जैसे अनेक घटकों के बीच विभाजित है लेकिन जैन धर्म कहता है 'मित्ती में सव्व भूएसु' अर्थात सभी प्राणी मेरे मित्रवत हैं। इस एक सिद्धांत ने ही जाति, वर्ग, वर्ण, लिंग, भाषा, क्षेत्र आदि सभी भेद की दीवारों को ध्वस्त कर देने की शक्ति छुपी है।

भगवान महावीर स्वामी, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर केवल एक संत या आध्यात्मिक गुरु ही नहीं थे बल्कि वो एक महान दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक भी थे। शरीर रूपी प्रयोगशाला के साथ वर्षों की कठोर साधना (शोध) के पश्चात महावीर की आत्मा ज्ञानशक्ति के उस चरमोत्कर्ष पर पहुंची जिसे केवलज्ञान कहा जाता है। महावीर ने कहा था - 'अप्पणा सच्च मेसेज्जां मेत्ति भूएसु कप्पए', स्वयं सत्य को खोजें एवं सबके साथ मैत्री करें। यही उनके 'जीयो और जीने दो' सिद्धान्त का मूल कारक है । महावीर के प्रमुख सिद्धांत है अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत।

अहिंसा- हिंसा दूसरे को भयभीत करती है। हम अपने को बचाते हैं, दूसरे में भय पैदा करके। व्यक्ति भी ऐसे ही जीते हैं, समाज भी ऐसे ही जीते हैं औरझ राष्ट्र भी ऐसे ही जीते हैं। वस्तुतः सारा जगत भय और भय जनित हिंसा में जीता है। महावीर कहते हैं, सिर्फ अहिंसक ही अभय अवस्था को प्राप्त कर सकता है क्योंकि अहिंसा परमो धर्मः, अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है, अहिंसा ही परम ब्रह्म है। अहिंसा ही सुख शांति देने वाली है। अहिंसा ही संसार का उद्धार करने वाली है। यही मानव का सच्चा धर्म है, और यही मानव का सच्चा कर्म भी है। भगवान महावीर कहते हैं कि 'व सयं तिवयए पाणे, अद्वन्नेहि घायए, हणंतं वाणुजणाइ, वेरं वड्ठर अप्पनो' अर्थात् जो मनुष्य स्वयं हिंसा करता है या दूसरों से हिंसा करवाता है और हिंसा करने वालों का अनुमोदन करता है, वह संसार में बैर को बढ़ावा देता है ।

महावीर कहते हैं यह शाश्वत सत्य है कि कितने भी जतन करलो मौत तो आ ही जाती है फिर भी मरने के आखिरी क्षण तक हम जीना ही चाहते हैं, यह जीवेषणा यानि जीने की आकांक्षा ही हिंसा का आधारभूत भाव ही है। महावीर कहते हैं कि मृत्यु को स्वीकार कर लेना ही अहिंसा है। मृत्यु को परिपूर्ण भाव से स्वीकार कर लेने के पश्चात मैं किसी अन्य के जीवन को आघात पहुंचाने के लिए जरा भी उत्सुक नहीं रह जाता। जिस दिन मेरे लिए जीवन का कोई मूल्य नहीं रह जाता उस दिन मेरे लिए मृत्यु शून्य हो जाती है, और उसी दिन उस महाजीवन के, उस परम जीवन के द्वार खुलते हैं जिसका कोई अंत नहीं जिसका कोई प्रारंभ नहीं, जिस पर कभी कोई बीमारी नहीं आती और जिस पर कभी दुख और पीड़ा नहीं उतरती। और इस परम जीवन को बचाने की कोई जरूरत ही नहीं है। इसे कोई मिटा नहीं सकता, क्योंकि इसके मिटने का कोई उपाय ही नहीं है। इस परम जीवन को जानकर व्यक्ति अभय हो जाता है। और जो अभय हो जाता है, वह दूसरे को भयभीत नहीं करता।

अनेकांत- महावीर ने कहा था हमें अपनी आस्थाओं के साथ-साथ दूसरों के दृष्टिकोण का भी सम्मान करना चाहिए, यही अनेकांत यानि अनेकता में एकता का सिद्धांत है। मनुष्य हर बात को अपने नजरिये से देखता है और सोचता है कि जो मैं समझ रहा हूं वही सही है। सारी समस्याएं, द्वेष, विद्रोह आदि इसी कारण से होते हैं कि हम किसी भी बात का मात्र वही पहलू देखना चाहते हैं जो हमारे स्वार्थों के सबसे करीब होता है। महावीर का मानना था कि समानता व सह-अस्तित्व में अधिकार के साथ आदर की भी भावना निहित है। सह-अस्तित्व है तो ही स्व-अस्तित्व सुरक्षित है। यही वह अनेकांतपरक चिंतन है, जो विद्रोहों, झगड़ों और समस्याओं से हमें मुक्त रख सकता है। अनेकांत का सिद्धान्त बताता है कि

वैचारिक भिन्नता एक वास्तविकता है, सहमति और असहमति वैचारिक भिन्नता से उपजे दो कारक हैं, लेकिन इनमें से कोई भी कारक हमें यह निर्णय लेने का अधिकार नहीं देता कि जिस विचार, जिस सोच से हम सहमत नहीं है उसे हम नकार दें। अनेकांत दृष्टि के मूल में दो तत्व हैं, पूर्णता और यथार्थता। जो पूर्ण है और पूर्ण होकर यथार्थ रूप में प्रतीत होता है, वही सत्य है।

अपरिग्रह ~ महावीर परिग्रह को हिंसा कहते हैं और अपरिग्रह को अहिंसा। आपके पास कोई वस्तु है, आपका उससे कितना मोह है, कितना आप उसको पकड़े हुए हैं, कितना आपने उस वस्तु को अपनी आत्मा में बसा लिया है कि सारी जिंदगी उठते-बैठते, क्या मेरा है, कहीं कोई और तो मेरे उस पर कब्जा नहीं कर रहा है इसकी फिक्र रहती है। जमीन का वह टुकड़ा , जिसको आप अपना कह रहे हैं, आपसे पहले कितने लोग उसे अपना कह चुके हैं। कितने लोग उसके दावेदार हो चुके हैं। दावेदार आते हैं और चले जाते हैं और जमीन का टुकड़ा अपनी जगह ही रहता है। दावे सब काल्पनिक हैं आप ही दावा करते हैं, आप ही दूसरे दावेदारों से लड़ लेते हैं, मुकदमे हो जाते हैं, सिर खुल जाते हैं और हत्याएं भी हो जाती हैं। हमारे जीवन में हिंसा इसीलिए है कि बिना मारे मालिक होना मुश्किल है। क्योंकि दूसरा भी मालिक होना चाहता है। अगर वह जिंदा रहेगा तो वह मालिक होने का प्रयत्न करता रहेगा।

महावीर की उत्सुकता समानता में नहीं अहिंसा में है। वे कहते हैं अहिंसा के फैलाव से ही समानता संभव है। महावीर जिस दिन खुले आकाश के नीचे आकर निर्वस्त्र खड़े हो गये, उस दिन उन्होने कहा कि मैं हिंसा को छोड़ता हूं, इसलिए सब सुरक्षा छोड़ता हूं। इसलिए सब आक्रमण के उपाय छोड़ता हूं। अब मैं निहत्था, निशस्त्र, शून्यवत भटकूंगा। अब मेरी कोई सुरक्षा नहीं, अब मेरा कोई आक्रमण नहीं तो अब मेरी कोई संपत्ती कैसे हो सकती है। अहिंसक की कोई संपत्ती नहीं होती। अगर कोई अपनी लंगोटी पर भी अपनी मालकियत बताता है और दावा करता है कि यह लंगोटी मेरी है तो वह अहिंसक नहीं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि महल मेरा है या कि लंगोटी मेरी है। वह मालकियत का भाव ही हिंसा है। इस लंगोटी पर भी गर्दनें कट सकती हैं। और यह मालकियत बहुत सूक्ष्म होती चली जाती है। धन छोड़ देता है आदमी, लेकिन कहता है, 'धर्म' मेरा है। महावीर ने कहा है कि आग्रह भी हिंसा है। यह अति सूक्ष्म बात है। आग्रह हिंसा है, अनाग्रह अहिंसा है।

महावीर कहते हैं कि वैचारिक संपदा को अपना मानना भी हिंसा है। क्योंकि जब भी हम यह कहते हैं कि यह मेरा विचार है, इसलिए सत्य है, तब हम यह नहीं कहते कि जो मैं कह रहा हूं वह सत्य है, तब हम यह कहते हैं कि मैं ही सत्य हूं और जब मैं स्वयं सत्य हूँ तो मेरा विचार तो सत्य होगा ही। इस जगत में जितने भी विवाद हैं वे सत्य के विवाद नहीं हैं। वे सब इसी 'मैं' के विवाद हैं।

अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह दरअसल एक ही मूल सिद्धान्त के तीन पहलू हैं, अहिंसा का आचार, अनेकांत का विचार और अपरिग्रह का व्यवहार मनुष्य के जीव जीवीन को चेतना के ऊर्ध्वमुखी सोपानों पर ले जाता है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

नवशास्त्रीयतावाद, संघर्षमयी समय और कला में तानाशाही

कलाकार हमेशा कुछ नया करने की सोचता है अलग बात है कि इस खोज में कई बार उसे पुनः वहीं पंहुच जाना होता है जहां से वो चला होता है पर इसी खोज में कभी ऐसे जगह पहुंच जाना होता है जो लोगों हेतु मिशाल बन जाता है। रॉकॉको शैली से लोग ऊब रहे थे, कलाकार विरोध के मूड में थे, फ्रेंच सत्ता के उथल-पुथल से खुद को बचा नहीं पा रहा था। आम जनमानस बदलाव की बयार को तड़प रही थी।

कलाकार भी इससे अछूते नहीं रहना चाहते थे। लुई पंद्रहवां को शासक बनने से पूर्व व बाद में भी काफी कुछ झेलना पड़ा पर कला में काफी अच्छा कार्य हुआ। पोंपेई के उत्खनन में ग्रीक की प्राचीनतम कलाकृतियां मिलीं जिस पर प्रसिद्ध जर्मन विद्वान विंकेलमान ने खूब सारे लेख लिखे। लोगों में ग्रीक कला एक बार पुनः आदर्श रूप में प्रस्तुत हुई। कलाकार भी पीछे नहीं रहना चाहते थे। जॉक दाविद् भी यहां की यात्रा कर चुका था। नये पुराने का ये चक्र चलता ही रहता है। हमें लगता है कि हम कुछ नया कर रहे हैं जबकि वो पहले ही हो चुका होता है। नवशास्त्रीयतावाद में ग्रीक के आदर्श रूप का पुनः दर्शन तो है ही और मानव शरीर उनके सौंदर्य, वेशभूषा का भी आदर्श रूप दर्शित होता है खैर प्राप्त मूर्तियों एवं अवशेषों से कलाकार एक बार फिर कुछ नया करने की ताक में थे जिसमें प्रमुख भूमिका थी 30 अगस्त 1748 में पेरिस के एक समृद्ध परिवार में जन्में जॉक लुई डेविड (जॉक दाविद) की। पिता का साया बचपन में ही उठ गया था, जीवन संघर्समय हो गया था पर जल्द ही खुद को संभाल लिया था दाविद ने। वास्तुकारों के बीच रहना था। मां और चाचा को इनमें भविष्य का वास्तुकार नजर आ रहा था पर इनका मन चित्रों में रमता था लगातार ड्राइंग करना आदत में शुमार हो चुका था, आप जल्द ही एक महान कलाकार बनना चाहते थे, रॉकॉको शैली के चित्रकार बाउचर तथा कलाकार जोसेफ से सीखते हुए आप निरंतर अच्छा करते जा रहे थे। राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु कई बार विफलताओं से सामना हुआ पर निराशा को निराश होना पड़ा और आप अपने कृति 'एरासिस्ट्रेटस डिस्कवरिंग द कॉज़ ऑफ़ एंटिओकस डिसीज' (कैनवास पर तैल), का निर्माण करते हैं और प्रिक्स डी रोम से सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। उपर्युक्त तैल चित्र में मरीज, बीमारी, एवं बीमारी के कारण का पता लगाने का प्रयास करता वैद्य है। माहौल गमगीन है। कृति ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है।

निकोलस पूसान तथा कैरेबेज्जियो जैसे 17वीं सदी के कलाकारों के चित्रों का अध्ययन करने का मौका भी आपको मिला। जर्मन कलाकार अंतोन रैफेलमिंग्स से परिचय के दरम्यान ही आपकी पहुंच विंकेलमैन के सैद्धांतिक लेखों तक हो सकी, पोंपेई से प्राप्त मूर्तियों और अवशेषों से प्रभावित होकर ही नवशास्त्रीयतावाद का उदय हो सका, ग्रीक शैली का अपडेट वर्जन कहा जा सकता है इस वाद को।

देश में उथल-पुथल जैसा माहौल था और इसी वजह से दाविद् कभी पक्ष कभी विपक्ष की भूमिका में आ जाते थे पर तमाम झंझावातों से पार पाते हुए आपकी कृतियां निखरती जा रही थी, प्रतिनिधित्व की भूमिका में आ गई थीं आपकी कई कृतियां, जो कई बार विवाद का कारण भी बनी। राजनैतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषयों को चित्रित करना आपकी विशेषता हो गई थी। तीन भाइयों के शपथ और जोश के बीच गमों में झूलती बहन भाव, जिसको इस शपथ के परिणामस्वरूप अपने को खोने का डर था, साथी महिलाओं के चेहरे पर भी गम साफ दिखाई दे रहा है। डर और उत्साह जैसे भावों को एक ही फलक पर समेटे हुए है कृति 'द ओथ ऑफ होराथी'। यह चित्र

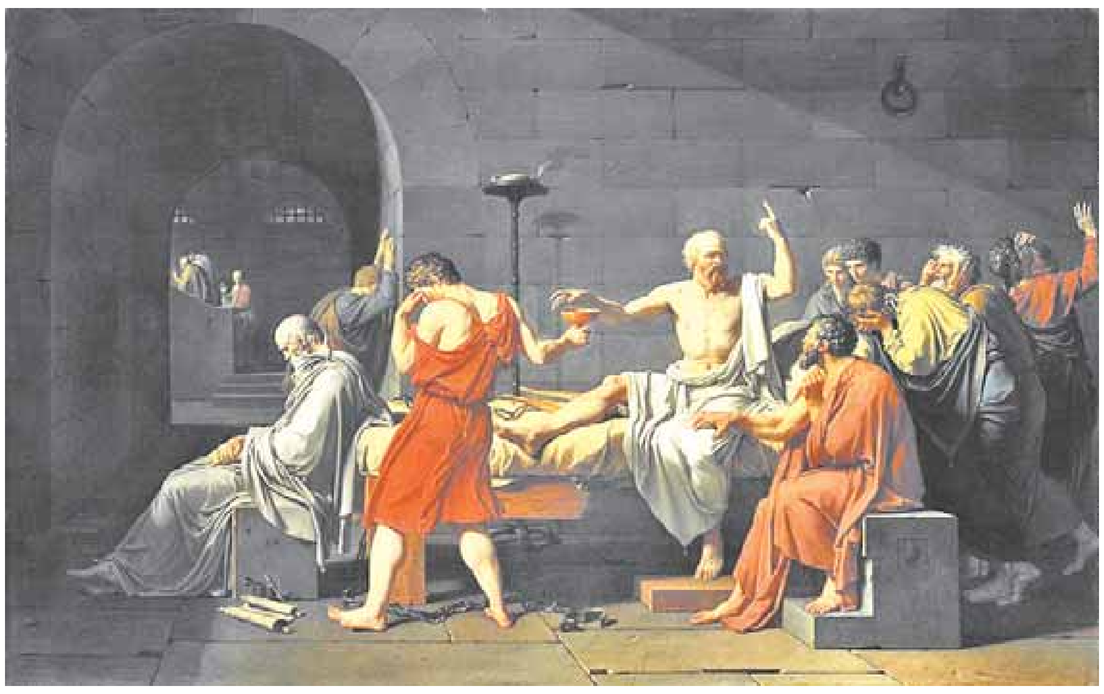

नवशास्त्रीयतावाद के लिए महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। कृति 'सुकरात की मृत्यु' जो प्लेटो की रचना फीडो पर आधारित है, में सुकरात को अपने अंतिम समय में भी पथ से न डिगते हुए दिखाया गया है, अंतिम समय में भी शिष्यों को शिक्षा देने की भव्य मुद्रा, दूसरा हाथ जहर के प्याले की तरफ बढ़ता हुआ है माहौल एकदम गमगीन है वहां उपस्थित सभी चेहरों पर गम तैर रहा है सिवाय मौत के द्वार पर खड़े सुकरात के। सफेद बिखरा-बिखरा सा लिबास ही उभर रहा है भव्य व्यक्तित्व के साथ। प्लेटो जो बिल्कुल ही शांत दिखाई दे रहा है के नीचे पड़ा संदेश पत्र भी व्यथित सा जान पड़ा है। सुकरात की तरफ जहर का प्याला बढ़ा रहा शिष्य इतना विवश है, दुखी है कि आंख मिला पाने की हिम्मत भी नहीं जुटा पा रहा। बाकी वहां मौजूद सभी के चेहरों पर दुख और संकट के भाव स्पष्टतः दिख रहे हैं। प्रकाश कृतिम है, शैली ग्रीक आधारित है पर चित्र जीवंत है। चित्र न्यूयॉर्क के म्युजियम में सुरक्षित है।

ब्रूट्स और उनके पुत्र संबंधी कृति में भी दुखों का पहाड़ उभर आया है। ब्रूट्स जो रोमन नेता था, की दर्दभरी दास्तां को बड़े ही जीवंत तरीके से उकेरने का प्रयास किया है दाविद् ने। आपके प्रमुख चित्रों में सिंहासनारोहण का भी जिक्र है। सामाजिक, राजनैतिक तथा ऐतिहासिक विषय, यूनान व रोम की वेशभूषा, हिष्ट-पुष्ट बलिष्ठ शरीर वाले आकृतियों के कलाकार दाविद में फ़्रेंच राष्ट्रीय लोकसभा में चुनाव के बाद बहुत ही परिवर्तन देखने को मिला। कलाक्षेत्र में क्रांति सी आ गई पर फ़्रेंच कलाक्षेत्र में खुद को ही श्रेष्ठ मनवाने के दंभ से ये बच नहीं सके। कला में तानाशाही रवैया अपनाने वाले कलाकार बन गये थे दाविद्। कई कलाकारों को इनके शैली पर काम करने हेतु मजबूर भी होना पड़ा। विवश होकर उनको भी नवशास्त्रीयतावाद का अनुयायी बनना पड़ा। रॉकॉको शैली लुप्तप्राय सी गई। नेपोलियन के राजा बनते ही दाविद् प्रमुख राजचित्रकार के रूप में नियुक्त हुए। बची खुची कसर अब पूरी हुई और कला के लगभग सभी विधाओं पर दाविद् की तानाशाही भारी पड़ने लगी। प्राचीनता की छाप लगभग हर जगह दिखने लगी। कृति 'सबाइन महिलाओं का हस्तक्षेप मे' युद्ध और उसके विभीषिका को दर्शाने का प्रयास हुआ है। तलवार ताने योद्धाओं के बीच सबाइन महिलाएं उन्हें युद्ध करने से रोकने के प्रयास में दिखाई गई हैं। कुछ महिलाएं बच्चों को बचाने का कार्य भी कर रहीं हैं जो भविष्य को सम्हालने को दर्शाता है। युद्ध के कारण अस्त व्यस्त हुआ जीवन साफ झलक रहा है कृति में। डर को दिखा पाने में पूरी तरह सफल हुआ है कलाकार। कलाकार में जेल से वापसी के बाद कुछ बदलाव भी दिखे और उसको लगने लगा था कि नवशास्त्रीयतावाद के मूल में जो भी नियम हमने गढ़ें हैं वो इतने कठिन हैं कि बहुत दिनों तक नहीं टिक सकते। एक दुर्घटना की वजह से 1825 को इस महान कलाकार की मृत्यु हो गई। जल्दी ही उसके थोपे गये नियमों से बाकी कलाकार खुद को आजाद कर लिए और कला में एक नये वाद की ओर बढ़ चले।

वो जनता कहाँ है, जिसने सीक्वल की माँग की ?

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

कोरोना संक्रमण काल के दौरान लॉकडाउन के समय जी- फाइव पर रिलीज फिल्म 'साइलेंस - कैन यू हियर इट ?' एक ठीक ठाक सस्पेंस थ्रिलर फिल्म थी । फिल्म में ऐसा कुछ भी खास नहीं था जिसे आधार बनाकर सीक्वल बनाया जाये या फिर फिल्म के कलाकारों को लेकर इसकी फ्रेंचाइजी विकसित करने की कोशिश की जाए। इधर मनोज बाजपेयी का दावा है कि -' साइलेंस- टू - द नाइट आउल बार शूट आउट ' दर्शकों की भारी मांग पर जी- फाइव को बनानी पड़ी। साइलैंस - केन यूं हियर इट को भी अपार दर्शकों का समर्थन नहीं मिला था अतः साइलैंस- टू की माँग करने वाले दर्शक कहाँ से आयेंगे यह एक बड़ी पहेली है ।

बस अथवा ट्रेन के सफर में , मोबाइल के अवतरण के पहले सुलभ और लोकप्रिय साहित्य का दर्जा प्राप्त जासूसी उपन्यासों का बड़ा दबदबा था ।तब ओमप्रकाश शर्मा और वेदप्रकाश पाठक और कुछ हद तक कर्नल रंजीत के जासूसी उपन्यास भी खूब पढ़ें जाते थे । इन उपन्यासों में लेखक अपराध की तफ्तीश के व्यौरे को अपराध की पड़ताल करने वाले पात्रों के आपसी संवाद के माध्यम से व्यक्त करते थे । प्रिण्ट मीडिया का यह चलन उस विधा के लिये तो बेहद उपयुक्त था मगर जब इस शैली को किसी क्राइम थ्रिलर बनाते समय फिल्म या वेबसिरीज़ बनाने वाले निर्माता-निर्देशक अपनाते हैं तो एक अजीब-सी स्थिति बन जाती है । हमारी बात पर यकीन न हो तो ज़ी-फाइव पर हाथ ही में प्रदर्शित - ' साइलैंस-टू ' को देख लीजिए । साहित्य में ऐसे जासूसी उपन्यासों के

लेखन को लुगदी साहित्य करार देकर हिकारत से देखा जाता है और आज़ उसी लेखन शैली को इस क्राइम थ्रिलर में आजमाना चौंकाता है ।इस लेखन शैली को अपनाने के कारण फिल्म में बहुत ज्यादा और लम्बे लम्बे संवाद है । कलाकार अपराध की तफ्तीश करके नहीं दिखा रहे, वे एक दूसरे को बताने के बहाने दर्शकों को तफ्तीश के बारे में समझाते रहते हैं ।

फिल्म की कहानी एक सहायक पुलिस आयुक्त अविनाश वर्मा के आसपास बुनी गई है । पुलिस विभाग ने उनको तीन इंस्पेक्टर और एक हवलदार का अमला दिन-रात काम करने वाली स्पेशल इन्वेस्टिगेशन यूनिट के लिये दिया है । अविनाश की भूमिका में मनोज बाजपेयी , फिल्म के हीरो हैं अतः वे अलग ही अन्दाज़ में काम करते हैं ।वह फोरेंसिक विभाग में काम करने वाले न्यू मिलेनियल्स से प्रभावित भी होते है। फोन पर अपनी बेटी से लम्बी लम्बी बातें करते है। शेरो शायरी के शौकीन है। राह चलते बेटियों को बचाने भी आते है और, अगर कत्ल किसी बेटी का हुआ है तो कुछ ज्यादा ही 'इमोशनल' हो जाते है।

कहानी एक बार में हुई हत्याओं से शुरू होती है। पटकथा इतनी लचीली और निर्देशन इतना लचर है कि निर्देशक दिखाएगा आपको कुछ और कहानी को ले जाएगा कहीं ओर । अबान का ये फॉर्मूला उनकी पिछली फिल्म 'साइलेंस ' में भी दिखा था। इस बार अपराध की तपतीश एक सियासी कत्ल से शुरू होती है। हीरो चूंकि एसीपी है तो उसे इस घटना का दूसरा एंगल नजर आता है। टेबल पर बिखरे खून के शरीर से निकलते वक्त बने कोण और जमीन पर गिरी लाश से वह मामले का असली एंगल टीम को समझाता है। राजस्थान पुलिस की एक इंस्पेक्टर को भी एक लाश मिलती है। वह एसीपी की मदद मांगती है और, फिर तार जुड़ते जाते हैं और एक अजीब ढंग से कहानी आगे बढ़ने लगती है , फिर अटकती है , भटकती भी है और अनायास थम जाती है ।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है मनोज बाजपेयी अब इस टाईप की फिल्मों में फिल्म के लिये एक अहम् हिस्सा हो गये हैं और अपने बूते ही फिल्म को खींच ले जाने की कूवत रखते हैं मगर मनोज बाजपेयी के प्रशंसक उनसे ज्यादा अपेक्षाएं रखते है और, मनोज को भी अपनी तारीफ दिल पर नहीं लेनी चाहिए। अगर एसीपी अविनाश पहली फिल्म में बिटिया की भेजी अतरंगी वाक्यों वाली टी शर्ट पहनता है तो दूसरी फिल्म में वह ऐसा क्यों नहीं करता? न निर्देशक बताती हैं और न मनोज खुद। मनोज बाजपेयी की जो उम्र हो चली है और जो उनकी कद काठी है, उसके मुताबिक एक्शन रचने को अब हिंदी सिनेमा के एक्शन निर्देशकों को कुछ नया सोचना चाहिये ।प्राची देसाई जो इंस्पेक्टर संजना भाटिया की भूमिका निभा रही हैं ,वो भी अच्छा अभिनय करती हैं इनके अलावा वकार शेख , साहिल वैद्य और श्रुति भावना ने भी पुलिस अधिकारियों की भूमिका को ठीक-ठीक निभाया है। यदि फिल्म की पटकथा और निर्देशन चुस्त होता तो यह एक अच्छी फिल्म होती ।

गर्व से कहता हूं, मैं हिन्दू हूँ - कमलनाथ

आमला ब्लॉक के चुटकी ग्राम में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम के पक्ष में आमसभा को किया संबोधित

बैतूल, संजय द्विवेदी। बैतूल-हरदा संसदीय क्षेत्र के आमला ब्लॉक में कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम के पक्ष में चुटकी ग्राम में आमसभा को संबोधित करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कहा कि आज कल गारंटी की खूब बातें हो रही है। उन्होंने मोदी सरकार को निशाने पर लेते कहा कि इनके राज में महंगाई की गारंटी पक्की है। भाजपा के लोग बेरोजगारी पर बात नहीं करते, किसानों की समस्या पर नहीं बोलते, 5 प्रदेश से घिरे मध्यप्रदेश में निवेश नहीं आ रहा है। मुझे सबसे ज्यादा चिंता युवाओं की है। मध्यप्रदेश बेरोजगारी में नंबर 1 है।

गर्व से कहता हूं मैं हिंदू हूं- उन्होंने कहा कि धर्म राजनीति के प्रचार का विषय नहीं है। राम मंदिर का पट्टा, क्या इनके नाम है। राम मंदिर मेरा आपका सबका है। मैं गर्व से कहता हूं मैं हिन्दू हूं। मैंने छिंदवाड़ा में सबसे ऊंची हनुमानजी की प्रतिमा बनवाई, लेकिन इसका कभी प्रचार नहीं किया। हर चुनाव के अपने मायने होते है। यह चुनाव सिर्फ रामू टेकाम के भविष्य का चुनाव नहीं, संविधान को बचाने का चुनाव है। संविधान से छेड़छाड़ की कोशिश हो रही है। वोट डालने से पहले आपको विचार करना चाहिए कि 30 साल में भाजपा सांसदों ने आपको क्या दिया है? छिंदवाड़ा से तुलना करें, छिंदवाड़ा में स्किल डिवलेवमेंट सेंटर है, विकास हुआ है।

आमला का विकास मेरी जिम्मेदारी- आमला का इतिहास बदलना है तो पड़ोसी के नाते मुझ पर भरोसा करें, आमला का विकास मेरी जिम्मेदारी है। भाजपा राज में प्रदेश, घोटाले भ्रष्टाचार का प्रदेश बन गया, बिना पैसे के कोई काम नहीं हो रहा। भाषण के समापन पर कमलनाथ ने जय श्री राम का नारा लगाया। आमसभा को कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम, पूर्व विधायक निलय डागा, धरमू सिंह सिरसाम, सुखदेव पांसे ने संबोधित किया। मंच संचालन मनोज मालवे ने किया।

भाजपा ने नहीं किया वादा पूरा

कार्यक्रम में रामू टेकाम बोले, यह चुनाव मेरा या कमलनाथ का नहीं, संविधान बचाने का है। भाजपा ने झूठ बोलकर सरकार बनाई 2700 रुपए में गेहूं खरीदी नहीं हो रही है। लाड़ली बहनों को 3000 नहीं मिल रहे। उन्होंने गोंडी भाषा में आमसभा को संबोधित किया।

कांग्रेस छोडऩे वाले विधानसभा में थे भाजपा के साथ: डागा

चुटकी में आमसभा को पूर्व विधायक निलय डागा ने सबसे पहले संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जिन लोगों को कमलनाथ ने अंगुली पकडक़र राजनीति की सीढ़ी पर चढऩा सिखाया था, आज वो भाजपा में शामिल हो गए हैं और भाजपा नेताओं के पैर पड़ रहे हैं। कांग्रेस में जिनको मंच पर सम्मान मिलता था वे भाजपा में जाकर झाड़ू लगाकर दरी बिछा रहे हैं। वो इसी लायक थे, इसलिए उनकी घर वापसी हो गई है। इससे साबित होता है कि ये लोग विधानसभा चुनाव में भी भाजपा के साथ थे। राजनीतिक हलकों में यह माना जा रहा है कि निलय डागा का इशारा कुछ दिनों पहले बैतूल के कांग्रेस छोड़ने वालो के लिए था। अपने भाषण में निलय डागा ने सांसद पर आरोप लगाते हुए कहा कि आदिवासियों के अत्याचार मामले पर भाजपा सांसद कुछ नहीं बोलते। उन्होंने रामू टेकाम को सक्रिय और योग्य उम्मीदवार बताकर कांग्रेस को जिताने की अपील की।

यह थे मौजूद

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिलाध्यक्ष कांग्रेस हेमंत वागद्रे, समीर खान, पूर्व जिला पंचायत सदस्य राजू देशमुख, कांग्रेस सेवादल जिलाध्यक्ष अनुराग मिश्रा, सेवादल विधानसभा अध्यक्ष जितेंद्र शर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष नितिन गाडरे, पीआर बोडखे, रमेश काकोडिय़ा, मोनिका निरापुरे, भोला कांति, वीरेंद्र वरथे, छन्नू बेले, भोला कांति, किशोर माथनकर सहित सारणी और जिले के कांग्रेसजन मौजूद थे।

बैतूल विधानसभा के विभिन्न ग्रामों में आज और कल होगी कांग्रेस की बैठक

कांग्रेस प्रत्याशी, पूर्व विधायक और कांग्रेस जिलाध्यक्ष करेंगे ग्रामों का दौरा

बैतूल। कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम, पूर्व विधायक निलय विनोद डागा और कांग्रेस जिलाध्यक्ष हेमन्त वागद्रे 21 और 22 अप्रैल को बैतूल विधानसभा के ग्रामीण क्षेत्रों में बैठक आयोजित करेंगे। जिला कांग्रेस कमेटी से मिली जानकारी अनुसार कांग्रेसजन आज रविवार 21 अप्रैल को सुबह 11 बजे जसोंदी, दोपहर 12 बजे बोरिकास, 12.30 बजे दीवानचारसी, दोपहर 1 बजे कोलगांव, 1.30 बजे गोराखार, 3.00 बजे पीपला, 3.30 बजे हथनाझिरी,शाम 4 बजे सेहरा, 4.30 बजे अमदर, शाम 5.00 बजे भरकावाडी, 5.30 भोगीतेड़ा, शाम 6 बजे बडोरा में कांग्रेस कार्यकर्ताओं एवं आम-जन के साथ बैठक करेंगे। कल 22 अप्रैल दिन सोमवार को भी कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम व पूर्व विधायक निलय विनोद डागा, कांग्रेस जिलाध्यक्ष हेमन्त वागद्रे बैतूल विधानसभा के ग्रामीण क्षेत्रों में बैठक लेंगे। वे सुबह 11 बजे बाजपूर, 11.30 बजे भैंसदेही, दोपहर 12 बजे खेड़ली, 12.30 बजे खेड़ला, 1 बजे कुम्हारटेक, 1.30 बजे खंडारा, दोपहर 2 बजे बघवाड, 3 बजे बरसाली, 3.30 बजे लाखापुर, शाम 4 बजे निमझिरी, 4.30 मोवाड़, शाम 5 बजे कन्हड़गांव में कांग्रेस कार्यकर्ताओं एवं आम-जन के साथ बैठक करेंगे। सभी कांग्रेस कार्यकर्ता व आमजन को बैठक में उपस्थित होने की अपील की गई है।

गंज बस स्टैंड का पिछला रास्ता बंद, एक ही रास्ते से हो रही बसों की आवाजाही

नगरपालिका की अनदेखी, सडक़ पर पल-पल लग रहा जाम

बैतूल। शहर में आगे पाठ पीछे सपाट जैसी स्थिति लगभग सभी जगहों पर देखने को मिलती हैं। आम जनता को सुविधा देने के लिए काम तो जोर शोर से शुरू किया जाता है, लेकिन थोड़े ही दिनों में स्थिति जस की तस नजर आने लगती है। शहर दिनो-दिन अतिक्रमण के हमले की चपेट में आता ही जा रहा है। चुनाव में व्यस्त शासन-प्रशासन के द्वारा इस पर ध्यान न देने से पैदल चलना और सड़क पर बस-गाड़ियों का चलना मुश्किल हो गया है। सड़कों पर दिनोदिन स्थिति और भी ज्यादा खराब होते जा रही है।

ताजा मामला है गंज बस स्टैंड का, जहां यात्रियों की सुविधा के लिए बसों के आने और जाने के लिए दो रास्ते बनाए गए थे, लेकिन अब हालात यह हैं कि एक रास्ता बन्द होने की वजह से बस स्टैंड पर बसों के एक ही रास्ते से आवाजाही के चलते सडक़ पर पल-पल जाम की स्थिति बन रही है। हर 10 मिनट में सडक़ पर वाहनों की लंबी कतारें लग रही हैं, पर जिम्मेदारों का ध्यान इस ओर नहीं है।

कांतिशिवा के सामने से बनाया था रास्ता- आम लोगों की सुविधा देने के लिए तत्कालीन कलेक्टर ज्ञानेश्वर बी पाटिल ने गंज क्षेत्र में बसस्टैंड का संचालन शुरू करवाया था। कोठीबाजार बसस्टैंड से गंज पहुंचने वाली बसों के लिए कांतिशिवा टाकीज के बाजू से बकायदा रास्ता भी बनाया गया था, ताकि बस स्टैंड के पिछले हिस्से से प्रवेश कर गुरुद्वारा रोड होते निकल जाएं, लेकिन वर्तमान में यह रास्ता लम्बे समय से उपयोग किया जाना बंद कर दिया गया है। बसें स्टैंड के सामने वाले हिस्से से ही प्रवेश कर रही हैं और और इसी रास्ते से रवाना भी की जा रही हैं। बसों को रिवर्स करने के लिए सीधे सडक़ पर लाया जाता है और सडक़ पर चलने वाले चौपहिया और दो पहिया वाहनों के चालकों को अपने वाहन रोकना पड़ता है।

सडक़ के दोनों तरफ लगा रहता है जाम- बस स्टैंड पर व्यवस्था गड़बड़ाए जाने का खामियाजा उन वाहन चालकों को भुगतना पड़ रहा है जो स्टेशन और गुरुद्वारा रोड से सीधे आना-जाना करते हैं। बसों को सीधे सडक़ पर लाकर टर्न करने में ही चालक को 4 से 5 मिनट लग रहा है। तब तक सडक़ की दोनों तरफ वाहन रोकने पड़ रहे हैं। वहीं स्टैंड का स्पेस कम होने के चलते यात्रियों के हादसे का शिकार होने की भी संभावना बनी रहती है। यदि नगरपालिका पुन-पुरानी व्यवस्था बहाल करने का प्रयास करें, तो नगर के लोगों को जाम जैसी स्थिति से निजात मिल सकती है और दुर्घटनाओं से भी बचा जा सकता है।

व्यवस्था बनाने का करेंगे प्रयास

बसस्टैंड के दूसरे रास्ते की जानकारी मुझे नहीं थी। हम आगे व्यवस्था बनाने का प्रयास करेंगे।

-ओमपाल सिंह भदौरिया, मुख्य नपा अधिकारी, नगर पालिका बैतूल

चुनाव प्रेक्षक ने किया महाराष्ट्र सीमा से लगे मतदान केंद्रों का निरीक्षण

मतदान केंद्र व्यवस्था को लेकर दिए दिशा निर्देश

बैतूल/मुलताई। बैतूल हरदा हरसूद लोकसभा चुनाव सामान्य प्रेक्षक प्रदीप ठाकुर ने शनिवार महाराष्ट्र बॉर्डर से लगे हुए प्रभात पट्टन ब्लाक के मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान वे पट्टन ब्लाक के ग्राम मालेगांव, चकोरा, वंडली, कुंदा रैयत आदि गांव पहुंचे। जहा उन्होंने मतदान केंद्रों की स्थिति देखी और आवश्यक व्यवस्था किए जाने हेतू दिशा निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान सामान्य प्रेक्षक के साथ प्रभात पट्टन के नायब तहसीलदार राजेश दुबे व लाइजनिंग अधिकारी मुख्य रूप से उपस्थित रहे। लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण रूप से संपन्न कराने और सभी व्यवस्था पूर्ण करने हेतु उनके द्वारा कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। मतदान केंद्रों के निरीक्षण के बाद वे एसएसटी चेक पोस्ट बिसनुर भी पहुंचे, जहा उन्होंने तैनात कर्मचारियों से जानकारी ली और सभी आने जाने वाले वाहनों की जांच किए जाने के लिए दिशा निर्देश दिए।

सुर, ताल और लय का संगम है संगीत: सोलंकी

समर स्किल केम्प में छात्राओं ने डांस व संगीत के गुर सीखे

देवास। गायन सीखने का सबसे बड़ा तरीका है सुनना । सुर, ताल और लय का संगम है संगीत । पहले गायन सीखने के संगीत सीखना अनिवार्य होता था अब आप सुनकर भी गायन की समझ बना सकते है यह बात मुख्य अतिथि प्रख्यात गायक व विकासखंड शिक्षा अधिकारी अजय सोलंकी ने कही। महारानी चिमनाबाई हायर सेकंडरी स्कूल में चल रहे समर स्कील केम्प में शनिवार को छात्राओं ने नृत्य, गायन व वादन संबंधित अनेक बारीकियां सीखी । विद्यालय की संगीत शिक्षिका नीलम पटेरिया ने तबले व हारमोनियम की विभिन्न जानकारी देते हुए तानपुरा, सितार और वीणा में अंतर बताया। विशेष अतिथि जुगलकिशोर राठौड़ ने कराओके विधा विशेषता व बारीकियों से अवगत कराते हुए फीमेल आवाज में सत्यम शिवम सुंदरम गाकर सभी को चौका दिया। प्राचार्य रुचि व्यास ने छात्राओं को गायन हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन हितेन्द्र यादव ने किया आभार आदिल पठान ने माना। इस अवसर पर विद्यालय परिवार की विनीता शर्मा, दीपाली मिरजकर, किरण खिंची, अंकित गरासिया, रामकली मेहरा, राखी धाणी, अर्चना कहार, ज्ञानेश्वरी पटले व अनेक छात्राएं उपस्थित थी।

शनि सरोवर में फिर पकड़ाया मछलियों से भरा जाल

नहीं थम रहा मछली चोरी का सिलसिला

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर के छोटे तालाब में दिनदहाड़े जाल डालकर मछलियां पकड़ी जा रही हैं। नगर पालिका के कर्मचारियों ने तालाब में हलचल होने पर जाल पकड़ा है और उसे निकालकर जला दिया। इधर जाल बिछाने वाले कर्मचारियों को देखकर मौके से भाग गए हैं। पवित्र नगरी होने से मुलताई में ताप्ती सरोवर, शनि तालाब में मछलियां पकड़ने पर बैन लगा हुआ है। इसके बावजूद भी लगातार शनि तालाब और ताप्ती सरोवर से मछलियां चोरी हो रही हैं। लोगों का कहना है कि नगर के कुछ लोग आस्था के चलते सरोवर में मछलियों को आटा और अनाज डालते हैं। लेकिन लगातार मछलियां चोरी होने से उनकी आस्था को चोट पहुंच रही है। नगर पालिका के कर्मचारी श्याम सेवतकर ने बताया कि शनि तालाब में पानी की सतह पर थर्माकोल तैर रहे थे, शक होने पर जब तालाब में कर्मचारी उतरे तो उनके हाथ में जाल आ गया। बताया जा रहा है कि मछली पकड़ने के लिए रात में जाल लगाया गया होगा। नगर पालिका के कर्मचारी निक्की कुरवाड़े, अनिल पापड़कर, नरेंद्र पवार और प्रकाश परिहार ने जाल को तालाब से बाहर निकाल लिया और उसमें फंसी मछलियों को वापस तालाब में छोड़ दिया। इसके बाद जाल को जला दिया गया। वहीं इसकी सूचना नगर पालिका के वरिष्ठ अधिकारियों को दी गई है।

राष्ट्र की समृद्धि के लिए भाजपा जरूरी - बबला शुक्ला

बैतूल विधानसभा के जनप्रतिनिधियों की बैठक संपन्न

बैतूल। पंच और पार्षद के चुनावो में हम जिस तन्मयता के साथ मतदान के लिए प्रयास करते है। उससे अधिक प्रयास हमे राष्ट्र के दिशा और दशा तय करने वाले लोकसभा चुनावों में करने की जरूरत है। राष्ट्र की समृद्धि के लिए भाजपा जरूरी है। उक्त उदगार भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला ने बैतूल विधानसभा के जनप्रतिनिधियों की

जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित बैठक में व्यक्त करते कहा कि नवमतदाता भाजपा को वोट करना चाहते है, समृद्ध और सक्षम हो रही बहनों का भी हमें साथ मिल रहा है, जरूरत है तो लगातार संवाद करने की। पिछले चुनावों में जिस तरह से संगठन ने काम किया है उसी तरह अब भाजपा की विचारधारा को विजयी बनाने के लिए तीसरी बार मोदी सरकार बनाना जरूरी है। श्री शुक्ला ने कहा कि हमारी सरकार होने से धारा 370 , राम मंदिर और सीएए का संकल्प पूरा हुआ है। अब हमे राष्ट्र के लिए अगले कुछ दिन संपूर्ण भाव के साथ भाजपा का जनाधार बढ़ाने के लिए जुट जाने की जरूरत है। बैठक का संचालन विधानसभा संयोजक मधु पाटनकर ने किया एवं अंत में आभार मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा ने व्यक्त किया। बैठक में जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, नपाध्यक्ष पार्वती बारस्कर, उपाध्यक्ष महेश राठौर, सुरेश गायकवाड, मंडल अध्यक्ष नितीन बारस्कर, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष कृष्णा लोखंडे, जनपद सदस्य, नगर पालिका परिषद के पार्षदगण मौजूद थे।

महावीर जयंती के उपलक्ष्य में निकली भव्य वाहन रैली, सभापति ने धर्म ध्वजा दिखाकर किया शुभारंभ

देवास। जिओ और जीने दो का संदेश देने वाले जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने दुनिया को अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य (अस्तेय) और ब्रह्मचर्य के बारे में बताया है। जिसे जैन धर्म के पंचशील सिद्धांत के तौर पर जाना जाता है। उन्होंने अपने जीवन काल में अपने प्रवचनों और उपदेशों के जरिए दुनिया को सही राह दिखाने और मार्गदर्शन करने का प्रयास किया। जैन समुदाय के लोग भगवान महावीर के जन्म का उत्सव बहुत ही जोश और उत्साह के साथ मनाते हैं। भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में शहर में शनिवार और रविवार को विभिन्न आयोजन धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। उसी के तहत महावीर जयंती उत्सव समिति के तत्वाधान में श्री चंदाप्रभु स्वामी मणिभद्रवीर नवयुवक द्वारा भव्य वाहन रैली का आयोजन किया गया। वाहन रैली का शुभारंभ नगर निगम सभापति रवि जैन ने धर्म ध्वजा दिखाकर किया। जिसके पूर्व आयोजन में पधारे सभी जैन मंदिरों के पदाधिकारियों व सभापति का माला एवं दुपट्टा पहना कर सम्मान किया गया। वाहन रैली सयाजी द्वार से प्रारंभ हुई जो शहर के प्रमुख मार्गो से होते हुए श्री चंदाप्रभुमंदिर एम जी रोड, श्री आदेश्वर मंदिर बड़ा बाजार, शंखेश्वर मंदिर नयापुरा, श्री पार्श्वनाथ दिगंबर मंदिर कवि कालिदास मार्ग, मुनिसुव्रत स्वामी मंदिर सिविल लाइन होते सुतार बाखल स्थित श्री चंदा प्रभू स्वामी मणिभद्र वीर जैन मंदिर पर समाप्त हुई। वाहन रेली का अनेक स्थानों पर स्वागत किया गया। वाहन रैली में बड़ी संख्या में महिला, पुरुष, बालक व बालिकाएं हाथो में धर्म ध्वजा लेकर दोपहिया व चार पहिया वाहन के साथ शामिल हुए। वाहन रैली में जैन समाज के संदेश देने वाली एवं मतदान के लिए जागरूकता देने वाली झांकियां भी शामिल हुई। वाहन रैली के समापन पर समाज के सभी वरिष्ठ जनों ने भगवान महावीर का जन्म कल्याणक जन्मोत्सव को धूमधाम के साथ मनाने की अपील कर सभी को रविवार को निकलने वाले जुलूस में शामिल होने का आग्रह किया।

सतपुड़ा एकेडमी की अनूठी पहल

ग्रीष्म ऋतु में पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए बच्चों को वितरित किए सकोरे

देवास। ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ मतलब मौसम में शुष्कता के साथ साथ शारीरिक शिथिलता का आगमन हो जाता है। यह शिथिलता शरीर में पानी की कमी की द्योतक है। मानव जाति इसकी पूर्ति आसानी से कर सकती है, परंतु बेजुबान, निरीह पशु-पक्षी अपनी प्यास को कैसे शांत करें। इसके लिए मानव को जागृत होकर इस भीषण गर्मी में प्यास से तड़पते पक्षियों के लिए कुछ मानवीय प्रयास करने होंगे। सबसे सरल उपाय है मिट्टी के सकोरों में पानी भरकर प्यासे पखेरुओं को जीवनदान दें। यह बात मक्सी रोड तुलजा विहार कॉलोनी स्थित सतपुड़ा एकेडमी में आयोजित सकोरे वितरण कार्यक्रम में संस्था संचालक भानूप्रतापसिंह सेंधव ने कही। शिक्षिका प्राची वडनेरकर ने भी बच्चों को पर्यावरण संरक्षण एवं पशु पक्षियों के महत्व के विषय में विद्यार्थियों को समझाया। शनिवार को विद्यालय में प्यासे पक्षियों के लिए विद्यार्थियों को सकोरों का वितरण किया गया। साथ ही निवेदन किया कि गर्मी के समय में पक्षियों

के लिए अपने-अपने घरों की बालकनियों, छतों, बगीचों, आंगन में मिट्टी के सकोरों में पानी भरकर रखें। इस अवसर पर विद्यार्थियों के साथ ही शिक्षक-शिक्षिकाएं भी उपस्थित रहे। सभी से यह अपेक्षा की गई कि घरों की बालकनी, छतों, गार्डन आदि में सकोरा लगाकर पक्षियों के पानी की व्यवस्था करेंगे और इस हेतु अन्य लोगों को भी प्रेरित करेंगे। कार्यक्रम का संचालन मुकेश पांडे ने किया। उक्त जानकारी मीडिया प्रभारी दिनेश सांखला ने दी।

इंदौर से अयोध्या तक साइकिल यात्रा

- जय श्री राम के उद्घोष करते हुए चले अयोध्या की ओर

देवास। शनिवार सुबह देवास और इंदौर के चार राममय राइडर्स ने इंदौर से अयोध्या तक सायकिल यात्रा की शुरुवात की। इन चार चौंपियन राइडर्स में देवास से हेमंत वर्मा, विमल वाजपेयी वही इंदौर से गणेश काले, राजेश ईरानी साइकिल यात्रा में शामिल हुए। इस गौरवपूर्ण क्षण पर देवास फिटनेस लवर्स ग्रुप ने उनकी मंगलयात्रा के लिए स्वागत कर शुभकामनाएं प्रेषित की। सभी साथियों ने पुष्पमाला से राइडर्स का स्वागत कर जय श्री राम का उद्घोष किया। चारो राइडर्स भी जय श्री राम का उद्घोष करते हुए अपनी मंजिल की ओर निकले हैं ।

वोट आंकलन के गणित में फंसी राजनीति...

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

नर्मदापुरम सम्भाग के इतिहास में देश को यहां से कई कद्दावर नेता दिये है साथ ही कई नेता यहां अपनी किस्मत अजमा चुके है। लेकिन इसके बावजूद नर्मदाचंल अपने विकास की बाट आज भी जोहती है। देखा जाए तो उसे अपना वाजिब हक ही नही मिला।विकास की बात की जाए तो नेताओं के व्यक्तिगत विकास के अतिरिक्त बताने के लिए कोई स्थानीय कारण नही है। जिससे जनता इन नेताओं के कहने से उम्मीदवार को वोट दें या उन्हें वोट मिल सके, ले दे कर यहां केवल राष्ट्रीय मुद्दे है और दूसरा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नाम है। जिसके सहारे भाजपा ने वोट मांगना शुरू किया है।

जातीय गणित का आधार- देखा जाए तो नर्मदांचल में स्थानीय मुद्दे प्रभाव शाली है जिसमें भाजपा जातीय समीकरण बैठाने की कोशिश कर रही है। जो समाजिक व्यवस्था ब्राह्मण, कुर्मी, ठाकुर, आदिवासी सभी समाज को वोट बैंक की तरह देख रही है प्रत्याशी का भी इस ओर झुकाव है। इसमें देखा जा रहा है कि हम भारतीय है यह कहना वर्तमान समय में भूल गए हैं। इस चुनाव में वोट मांगने का एक नए तरीका सामने आया है, जो राजनीति देखने को मिल रही है उससे देखकर वोटर समझ नहीं पा रहे यह केंद्र के लिए चुनाव है या राज्य के चुनाव हैं।

विधानसभा चुनाव मे देख चुके है जातीय समीकरण..- हालही में सम्पन्न हुए विधानसभा चुनाव के परिणाम यदि गंभीरता से देखें तो सत्ताधारी पार्टी के प्रत्याशी को नर्मदापुरम में पूरी तरह नकारा है। लेकिन इटारसी ने तत्कालीन विधायक को बढ़त दिलाकर भाजपा को जितवाया था। निर्दलीय प्रत्याशी ने बड़ी पार्टियों को टक्कर बराबर की दी थी जिसमें कही प्रत्याशी को देखा गया, कही पार्टी देखी गई लेकिन जानकार यही मान रहे है कि विधानसभा चुनाव में जातीय समीकरण एक महत्वपूर्ण कारण था।क्योंकि नर्मदापुर में जातीय समीकरण हावी होते है ।

देशवासी या फिर जाति..- जिस तरह से लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय स्तर पर जातीय जन गणना की बात कही जा रही है तो कही प्रतिनिधियों को जाति आधार पर चुनाव में खड़ा किया जा रहा है। इसे लेकर सवाल पैदा हो गया मतदाता अपने को देशवासी माने या जाति का..

मनभेद तो पैदा करता है जातिय समीकरण...- चुनावी माहौल में कई बार व्यक्तिगत द्वेष के चलते आपसी दुश्मनी हो जाती है जो आगे जाकर गंभीर अपराध में तब्दील हो जाती है। देखा गया है कि चुनावी रंजिश पीढ़ियों तक चलती है। पार्टियों को यहां प्रत्याशी और नागरिकों को दोनों में अंतर रखना बहुत जरूरी हो गया।

ओटीटी 'पुष्पा 2' की डील, करोड़ों में बिके अधिकार

तेलुगु सुपरस्टार अल्लू अर्जुन स्टारर निर्देशक सुकुमार की अपकमिंग मूवी 'पुष्पा 2' लेकर जबरदस्त क्रेज बना हुआ है। अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना स्टारर मूवी 'पुष्पा 2' की शूटिंग करीब-करीब पूरी हो चुकी है। फिल्म की शूटिंग आखिरी शेड्यूल में हैं। इसके बाद इस फिल्म को इसी साल 15 अगस्त 2024 तक रिलीज करने की तैयारियां तेज हो चुकी हैं। इस बीच मूवी को लेकर एक दिलचस्प जानकारी सामने आई है। खबर है कि इस फिल्म के ओटीटी अधिकार एक बड़े ओटीटी प्लेटफॉर्म ने हासिल कर लिए हैं। जानकारी के मुताबिक इस फिल्म के ओटीटी अधिकार एक मोटी रकम में हासिल किए गए हैं।

सुपरस्टार अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना स्टारर निर्देशक सुकुमार की इस बिग बजट मूवी के ओटीटी अधिकार नेटफ्लिक्स ने हासिल किए हैं। मिली जानकारी के मुताबिक सुपरस्टार अल्लू अर्जुन और निर्देशक सुकुमार की इस फिल्म के डिजिटल अधिकार मेकर्स ने करीब 275 करोड़ रुपये में बेचे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक अल्लू अर्जुन और निर्देशक सुकुमार ने अपनी मच अवेटेड मूवी 'पुष्पा 2' के डिजिटल अधिकार को खास स्ट्रेटेजी के तहत बेचा है। मेकर्स ने 'पुष्पा 2' के डिजिटल राइट्स के लिए बेस प्राइस पहले ही 250 करोड़ रुपये तय कर दिया था। ऐसे में इस फिल्म की ओटीटी डील 250 करोड़ रुपये से लेकर 300 करोड़ रुपये के बीच तय होनी तय थी।

तेलुगु सुपरस्टार अल्लू अर्जुन स्टारर निर्देशक सुकुमार की मूवी 'पुष्पा 2' जल्दी ही सिल्वर स्क्रीन पर रिलीज होने वाली है। इस फिल्म को मेकर्स 15 अगस्त 2024 के दिन रिलीज करेंगे। इसी वक्त इससे पहले रोहित शेट्टी और अजय देवगन की मूवी 'सिंघम अगेन' भी सिल्वर स्क्रीन पहुंचने की तैयारी में थी। जिसे कथित तौर पर फिलहाल टाल दिया गया है। इसकी वजह फिल्म के तय वक्त तक तैयार करने में नाकामी रही है। जिसकी वजह से 'पुष्पा 2' से होने वाली 'सिंघम अगेन' की ऑनस्क्रीन टक्कर फिलहाल टल गई है।

दीपिका पादुकोण का 'लेडी सिंघम' वाला अवतार

डायरेक्टर रोहित शेट्टी इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'सिंघम अगेन' को लेकर लगातार चर्चा में बने हुए हैं। ये फिल्म 15 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। बीते दिनों खबर आई थी कि फिल्म 'पुष्पा 2' के क्लेश के चलते इस फिल्म 'सिंघम अगेन' की रिलीज डेट पोस्टपोन कर दी गई है। हालांकि, इसको लेकर मेकर्स की तरफ से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया था। इसी बीच रोहित शेट्टी ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट से बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण की एक तस्वीर शेयर की है। दीपिका पादुकोण का 'लेडी सिंघम' अवतार देख फैंस काफी ज्यादा

एक्साइटेड हो गए हैं।

पॉपुलर डायरेक्टर रोहित शेट्टी की फिल्म 'सिंघम अगेन' साल 2024 की मच-अवेटेड फिल्मों में से एक है। इस फिल्म में अजय देवगन, दीपिका पादुकोण, करीना कपूर, टाइगर श्रॉफ जैसे सितारे नजर आने वाले हैं। वहीं, फिल्म में अक्षय कुमार और रणवीर सिंह का कैमियो होने वाला है। रोहित शेट्टी ने शुक्रवार को अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से दीपिका पादुकोण की एक तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में आप देख सकते हैं कि दीपिका पादुकोण पुलिस ऑफिसर की वर्दी में अजय देवगन के आइकॉनिक पोज को देते नजर आ रही हैं। रोहित शेट्टी ने इस तस्वीर के साथ लिखा है, 'मेरा हीरो, रील में भी और रियल में भी, लेडी सिंघम दीपिका पादुकोण।' दीपिका पादुकोण को लेडी सिंघम के अवतार में देखकर फैंस का फिल्म 'सिंघम अगेन' को लेकर एक्साइटमेंट डबल हो गया है।

दीपिका पादुकोण के वर्क फ्रंट की बात करें तो वह फिल्म 'सिंघम अगेन' और फिल्म 'कल्कि 2898' एडी में काम करते नजर आएंगी। दीपिका पादुकोण पिछली बार इसी साल जनवरी में सिनेमाघरों में रिलीज हुई फिल्म 'फाइटर' में नजर आई थीं। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर जमकर कमाई की थी। दीपिका पादुकोण की पर्सनल लाइफ की बात करें तो वह और उनके पति रणवीर सिंह पहले बच्चे के माता-पिता बनने वाले हैं।

वरुण धवन की दमदार वापसी कराएगी 'बेबी जॉन'

वरुण धवन की अपकमिंग मूवी 'बेबी जॉन' जल्दी ही सिनेमाघरों में धमाका करने की तैयारी में हैं। इस फिल्म को जवान फेम निर्देशक एटली कुमार के प्रोडक्शन बैनर तले बनाया जा रहा है। जाहिर है मूवी से दर्शकों की उम्मीदें कहीं ज्यादा है। फिल्म के निर्देशक कलीस हैं। जो वरुण धवन की इस अपकमिंग मूवी को लेकर हिंदी दर्शकों के बीच पहुंच रहे हैं। इस फिल्म को लेकर कयास हैं कि ये थलापति विजय स्टारर मूवी 'थेरी' की हिंदी रीमेक हैं। मगर फिल्ममेकर्स के मुताबिक ये मूवी

'थेरी' का इंप्रूव्ड वर्जन होगी। जिसे निर्देशक कलीस ने अपने स्टाइल में बनाया है। अब क्योंकि इस फिल्म को लेकर फैंस का उत्साह सातवें आसमान पर है।

बॉलीवुड लाइफ के साथ हुई इस खास बातचीत में रोहित जायसवाल ने बताया कि ये वरुण धवन के करियर की एक बेहतरीन एक्शन ड्रामा मूवी होगी। साथ ही ये फिल्म एक्टर वरुण धवन का धांसू कमबैक करवाने वाली है। रोहित जायसवाल ने कहा, 'सबसे पहली बात ये है कि वरुण धवन का अपना एक अलग लॉयल फैन बेस है। खासकर फीमेल फैंस। हम ये नहीं कह सकते कि वरुण धवन मार्केट से बाहर हो चुके हैं। लेकिन हां हम ये तथ्य भी नजरअंदाज नहीं कर सकते कि कोविड की वजह से मूवी रिलीज लिमिटेड हो चुकी है। लेकिन बेबी जॉन के साथ वरुण धवन धांसू कमबैक करने वाले हैं। ये मूवी बॉक्स ऑफिस पर भी धमाकेदार प्रदर्शन करेगी। ये बातें उस पर आधारित है। जैसा अभी तक मुझे इस फिल्म को लेकर पता चला है कि ये मूवी वाकई अच्छी है।'

रोहित जायसवाल ने आगे कहा कि इस फिल्म के साथ सबसे अच्छी बात ये है कि मूवी के साथ एटली कुमार का नाम जुड़ा है। जो दर्शकों को थियेटर तक खींचने में कामयाब होगा। रोहित जायसवाल ने कहा, 'वरुण एक मास स्टार हैं। जब वो इंडस्ट्री में आए तो उन्हें दूसरा गोविंदा तक कहा गया था। मगर जल्दी ही उन्होंने इंडस्ट्री में अपनी जगह बना ली और साबित कर दिया कि वो ओरिजनल वरुण धवन हैं। वो बेबी जॉन के अलावा कॉमेडी मूवीज भी कर रहे हैं। जो उनके करियर के लिए अच्छी बात है।

रियल बॉक्स

बीमारियों से कराहती फिल्मी दुनिया

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

बॉलीवुड में जब कोई कलाकार किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित होता है, तो उससे फिल्म से जुड़े कई लोग प्रभावित होते हैं। लेकिन, यह तय है कि बीमारी से कोई भी मुक्त नहीं है, फिर वो कितना भी बड़ा कलाकार ही क्यों न हो! बॉलीवुड में इन दिनों कई नामचीन लोग किसी न किसी बीमारी की गिरफ्त में हैं। कुछ की बीमारी जगजाहिर है, कुछ ने छुपा रखी है। लेकिन, बीमारी वो बला है जो कभी छुपी नहीं रहती! पहले के दौर में फिल्मी कलाकारों को लगता था कि अगर उनकी बीमारी की बात उनके चाहने वालों तक पहुंची, तो उनके करियर पर असर पड़ेगा। हो सकता है उन्हें काम भी नहीं मिलें। लेकिन, अब वो समय नहीं रहा। अब तो कलाकार खुद सोशल मीडिया पर बीमारी खुलासा करते हैं। लेकिन, पहले बीमारी को छुपाया जाता था। यही कारण है कि मधुबाला, किशोर कुमार, मीना कुमारी और गीता बाली की बीमारी का अंत तक किसी को पता नहीं चला।

बॉलीवुड का इतिहास फिल्मों से जुड़े लोगों की बीमारियों से भरा पड़ा है। कई बड़े कलाकार और डायरेक्टर जानलेवा बीमारियों का शिकार हुए! कुछ इलाज से ठीक हो गए, तो कुछ को बीमारियों ने लील लिया। अमिताभ बच्चन जैसे महानायक कई बीमारियों से पीड़ित हैं। करीब 40 साल पहले 'कुली' की शूटिंग के दौरान वे गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उन्हें लीवर सिरोसिस भी है, जो 'कुली' के सेट पर घायल होने दौरान ब्लड ट्रान्सफ्यूशन से हुआ। इसका असर आज भी खत्म नहीं हुआ। उन्हें अक्सर पेट में दर्द की शिकायत रहती है। उन्हें हेपेटाइटिस-बी भी हुआ था, जिसके चलते उनके लीवर का 75त्न हिस्सा खराब हो गया। इसके अलावा वे अस्थमा, लीवर सिरोसिस, टीबी, डाइवर्टिक्युलाइटिस ऑफ स्मॉल इंटेस्टाइन जैसी बीमारियों से जूझ रहे हैं।

सलमान खान आज के सबसे सफल नायक हैं। लेकिन, वे भी लंबे समय से एक अजीब सी बीमारी से परेशान हैं। मेडिकल की भाषा में इसे 'ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया' (प्रोसोपाल्जिया) कहा जाता है। यह चेहरे और जबड़े से जुड़ी ऐसी बीमारी है, जिसमें मरीज को हमेशा झनझनाहट जैसा दर्द होता रहता है। इसे फेसियल डिसऑर्डर भी समझा जा सकता है। ये बीमारी हज़ारों में एक को होती है। सलमान को इस बीमारी के चलते बहुत परेशानी होती है। कई बार बोलते समय उन्हें बहुत तेज दर्द होता है। यह दर्द कुछ सेकंडों या मिनटों के लिए होता है जो असहनीय होता है। उन्होंने अमेरिका से इसका इलाज करवाया जिसके बाद वो बेहतर हैं।

शाहरुख खान भी अब तक शरीर के अलग-अलग हिस्सों की आठ सर्जरी करा चुके हैं। बताया जाता है कि इसका कारण फिल्मों में डांस और एक्शन सीन हैं। फिल्म 'कृष' की शूटिंग के 2013 में रितिक रोशन ने कई एक्शन सीन किए थे। इसका असर उनके दिमाग पर भी पड़ा। दो महीने तक सिरदर्द की शिकायत रहने के बाद जब उनका सीटी स्कैन और एमआरआई किया गया तो पता चला कि उनके दिमाग में क्लॉट है, इसे क्रोनिक सबड्यूरल हीमेटोमा कहा जाता है। समझने के लिए इतना है कि उनके दिमाग में खून के थक्के जमा हैं। डॉक्टरों के मुताबिक सामान्यतः दिमाग की ऐसी स्थिति 65 साल की उम्र के बाद होती है। लेकिन, ऑपरेशन के बाद से रितिक ठीक हैं।

मिथुन चक्रवर्ती को फिल्मों में अपनी डांस स्टाइल के लिए जाना जाता रहा है। लेकिन, इन दिनों वे अपनी खराब सेहत की वजह से चर्चा में हैं। मिथुन को कोलकाता के एक प्राइवेट हॉस्पिटल भर्ती कराया गया था। उन्हें सीने में दर्द की शिकायत थी। दरअसल, उन्हें इस्केमिक सेरेब्रोवास्कुलर स्ट्रोक हुआ था। यह हार्ट से जुड़ी एक स्थिति है। इस प्रकार के स्ट्रोक में ब्रेन की तरफ ब्लड सर्कुलेशन में रुकावट आने लगती है। ब्रेन में रक्त का संचार स्लो होने के कारण ब्रेन को ऑक्सीजन और अन्य पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं जिससे ब्रेन डैमेज का रिस्क बढ़ जाता है। यह जानलेवा बीमारी है। इसे दुनिया की 10 घातक बीमारियों में एक माना जाता है। संजय दत्त ने भी 2020 में एक सोशल मीडिया पोस्ट में इस बात की पुष्टि की थी कि उन्हें कैंसर है। उनका देश और विदेश में इलाज हुआ। वरुण धवन ने भी खुलासा किया कि वे वेस्टिबुलर हाइपर फंक्शन नाम की बीमारी के शिकार हैं। यह एक बैलेंस डिसऑर्डर होता है, जो कान में इंफेक्शन या अन्य वजहों से हो जाता है।

70 के दशक की चर्चित अभिनेत्री मुमताज ब्रेस्ट कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से ग्रसित रहीं। 2000 में उन्हें इस बीमारी का पता चला और इसका इलाज हुआ। मुमताज के अलावा सोनाली बेंद्रे, लीजा रे, मनीषा कोइराला, ताहिरा कश्यप (आयुष्मान खुराना की पत्नी), अनुराग बासु कुछ ऐसे नाम हैं, जिन्होंने कैंसर को मात दी। अभिनेत्री फातिमा सना शेख ने भी ब्रेन डिसऑर्डर एपिलेप्सी की समस्या होने की बात कही थी। इसमें मरीज को मिर्गी के दौरे आते हैं। अभिनेत्री सामंथा रूथ प्रभु ने भी सोशल मीडिया पर बताया था कि वे मायोसाइटिस नामक एक ऑटोइम्यून डिसऑर्डर से ट्रस्ट हैं। यह कई बीमारियों का एक ग्रुप है। खूबसूरत अभिनेत्री यामी गौतम स्किन से जुड़ी बीमारी से पीड़ित हैं। इसे स्किन कंडीशन केराटोसिस पिलारिस कहा जाता हैं। इसमें स्किन पर छोटे-छोटे दाने हो जाते हैं। यामी इन दानों को छिपाने के लिए मेकअप का इस्तेमाल करना पड़ता है।

ऐश्वर्या राय की हमशक्ल मानी जाने वाली अभिनेत्री स्नेहा उल्लाल भी गंभीर बीमारी से पीड़ित रह चुकी हैं। वे ऑटोइम्यून डिसऑर्डर से पीड़ित रही। यह बीमारी खून से जुड़ी है। इससे वे इतनी कमजोर हो गईं थीं कि आधे घंटे खड़ी भी नहीं रह पाती थीं। लंबे समय तक उनका इलाज चला और अब वे ठीक हैं। अनिल कपूर की बेटी सोनम कपूर को इंडस्ट्री की स्टाइलिश एक्ट्रेस कहा जाता है। सोनम अपनी फिटनेस का भी काफी ख्याल रखती हैं। लेकिन, टीन एज में वे डायबिटीज से पीड़ित रह चुकी हैं। सोनम ने डाइट कंट्रोल करके इस बीमारी से निजात पाया।

कलाकारों पर सबसे ज्यादा कहर बरपाया कैंसर ने! ऋतुराज सिंह, ऋषि कपूर, इरफ़ान खान से पहले मुमताज, फिरोज खान, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, टॉम आल्टर और उससे पहले नरगिस और पृथ्वीराज कपूर भी कैंसर के सामने हार चुके हैं! राकेश रोशन को भी गले का कैंसर बताया गया है। 2007 में सैफ अली खान को छाती में दर्द की तकलीफ हुई थी। डॉक्टरों ने बताया कि उन्हें दिल का हल्का दौरा पड़ा था। उसके बाद से सेहत को लेकर ज्यादा सचेत हो गए हैं। ऐसा नहीं कि आज के कलाकारों पर ही बीमारियां मेहरबान हो रही है। गुजरे जमाने के राज कपूर भी दमे का शिकार हुए थे।

जाने-माने अभिनेता दिलीप कुमार दुनिया से विदा हो चुके। वे लंबे समय तक किडनी की समस्या से जूझते रहे। इसके अलावा उन्हें फेफड़ों में भी संक्रमण था, जिसके चलते वे अकसर अस्पताल में भर्ती रहे। एक्ट्रेस साधना ऐसे रोग से बीमार हुई, जिसका इलाज आज 50 पैसे की गोली से हो जाता है। बचपन में चेचक का टीका न लगने से गीताबाली को जान गंवानी पड़ी थी। पृथ्वीराज कपूर कैंसर का शिकार होने वाले पहले फिल्म सितारा थे। उनके बेटे शम्मी कपूर ने अपने जीवन की सांझ डायलिसिस करते गुजारी। जुबली फिल्मों के सितारे राजेंद्र कुमार भी बीमारी का ही शिकार हुए थे!

फ़िल्मी दुनिया के वे सितारे खुशनसीब हैं, जो दर्द से कराहकर और इलाज कराकर आज दर्शकों का मनोरंजन कर रहे हैं। लेकिन, ये किस्मत संजीव कुमार, विनोद मेहरा, अमजद खान, संगीतकार आदेश श्रीवास्तव, टॉम आल्टर, फिरोज खान, लक्ष्मीकांत बेर्डे, नरगिस, मीना कुमारी, मधुबाला और गीता बाली जैसे लोगों की नहीं रही! ये सभी किसी न किसी बीमारी का असमय शिकार हुए थे। लेकिन, बीमारी किसी की लोकप्रियता से प्रभावित नहीं होती! जब बीमारी को आना होता है, तो वो कोई पहचान नहीं देखती कि उसका शिकार होने वाला इरफ़ान खान है ऋषि कपूर है या कोई आम आदमी!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'वॉर 2' में दिखेगा इंटरनेशनल लेवल का एक्शन

ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर की मच-अवेटेड फिल्म 'वॉर 2' का जब से अनाउंसमेंट हुआ तब से लगातार चर्चा में बनी हुई है। वहीं, इस फिल्म का फैंस को काफी ज्यादा इंतजार है। अयान मुखर्जी के डायरेक्शन में बनने वाली फिल्म 'वॉर 2' को लेकर नया अपडेट आया है और इसे जानकार फैंस का एक्साइटमेंट लेवल डबल होने वाला है। दरअसल, लेटेस्ट मीडिया रिपोर्ट में बताया जा रहा है कि ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर की फिल्म में इंटरनेशनल एक्शन डायरेक्टर की एंट्री हो गई है। इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि मेकर्स 'वॉर 2' में किसी भी तरह की कमी नहीं रखना चाहते हैं।

आदित्य चोपड़ा के वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स की फिल्म 'वॉर 2' को लेकर बड़ी जानकारी सामने आई है। हॉलीवुड इंडस्ट्री के पॉपुलर एक्शन डायरेक्टर स्पाइरो रजाटोस की एंट्री ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर की फिल्म 'वॉर 2' में हो गई है। स्पाइरो रजाटोस ने 'कैप्टन अमेरिका सिविल वॉर', 'कैप्टन अमेरिका द फर्स्ट सोल्जर', 'एफ9- द फास्ट सागा' जैसी हॉलीवुड फिल्मों में काम किया है। इसके साथ ही स्पाइरो रजाटोस ने शाहरुख खान की सुपरहिट फिल्म 'जवान' में अपना कमाल दिखाया है। आदित्य चोपड़ा अपनी फिल्म 'वॉर 2' को हिट कराने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते हैं।

सिद्धार्थ आनंद के डायरेक्शन में बनी फिल्म 'वॉर' साल 2019 में रिलीज हुई थी और बॉक्स ऑफिस पर इसे काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला था। फिल्म 'वॉर' में ऋतिक रोशन, टाइगर श्रॉफ नजर आए थे। फिल्म 'वॉर' के सीक्वल 'वॉर 2' काफी बदलाव हुआ है। फिल्म ऋतिक रोशन के साथ जूनियर एनटीआर नजर आने वाले हैं, वहीं के डायरेक्शन की जिम्मेदारी सिद्धार्थ आनंद की जगह अयान मुखर्जी को दी गई है।

भव्यता के साथ फिर बड़े परदे पर आएंगे राम

अशोक जोशी

बड़े परदे पर आई 'आदिपुरूष' की दुर्दशा के बाद फिर इसी विषय पर 'रामायण' नाम से फिल्म बन रही है। नितेश तिवारी अब वे गलतियां नहीं करेंगे, जो 'आदिपुरुष' में ओम

राउत ने की और इस वजह से उनकी फिल्म डूब गई। नितेश तिवारी 'रामायण' कथा की मूल भावना और मूल चरित्र से छेड़छाड़ किए बिना इसे भव्य रूप देने की कोशिश में है। मूल कथानक और उससे जुड़ी भावनाओं और संवेदनाओं का खास ध्यान रखा जा रहा है। उन्होने यह भी सुनिश्चित किया कि फिल्म से किसी की भावनाएं आहत नहीं होगी।

पिछले साल बॉक्स ऑफिस पर घुटने टेक देने वाली फिल्म 'आदिपुरुष' के बाद अब महाकाव्य रामायण पर एक और फिर बनने जा रही है। इसकी तैयारियां काफी जोर-शोर से शुरू हो चुकी है। फिल्म 'रामायण' को 'दंगल' जैसी सफल फिल्म के निर्देशक नितेश तिवारी बना रहे हैं। खबर है कि इस फिल्म में रणबीर कपूर राम की भूमिका में और साई पल्लवी सीता का किरदार निभाएंगी। पहले यह रोल आलिया भट्ट को ऑफर किया गया था। लेकिन आलिया भट्ट पहले से ही संजय लीला भंसाली की बैजू बावरा के लिए अनुबंधित की जा चुकी थी। उसकी तारीखें 'रामायण' से टकरा रही थी। ऐसे में साउथ की बड़ी अभिनेत्री साई पल्लवी को कास्ट किया गया।

साउथ के सुपर स्टार और 'केजीएफ' एक्टर यश इस फिल्म में रावण का किरदार निभाएंगे। चर्चा है कि इस फिल्म के लिए यश अपने रोल के लिए फिल्म के नायक रणबीर कपूर से लगभग दोगुना अर्थात 150 करोड़ रुपए फीस लेगे। पहले इस रोल के लिए ऋतिक रोशन से बात की गई थी ,लेकिन वह निगेटिव भूमिका नहीं करना चाहते। इसलिए बात नहीं बनी। टीवी सितारे रवि दुबे इसमें लक्ष्मण की और रकुल प्रीत सिंह शूर्पणखा की भूमिका निभाएगी। चर्चा तो यह भी है कि सनी देओल को हनुमान की भूमिका के लिए अप्रोच किया गया, लेकिन उन्होंने अभी कोई फैसला नहीं लिया।

अरुण गोविल इस 'रामायण' में राजा दशरथ का किरदार निभा रहे हैं। पहले यह किरदार अमिताभ बच्चन को ऑफर किया गया था। लेकिन, किन्हीं कारणों से वे राजा दशरथ नहीं बने। कई साल पहले भी अमिताभ को राजा दशरथ का रोल ऑफर किया जा चुका है। बरसों पहले संजय खान 'द लीजेंड ऑफ राम' फिल्म बना रहे थे। तब भी अमिताभ को राजा दशरथ के रोल के लिए अप्रोच किया गया था। इस फिल्म में ऋतिक रोशन राम के रोल में नजर आने वाले थे और संजय के बेटे जायद खान लक्ष्मण बनने वाले थे। हालांकि, किसी वजह से फिल्म ठंडे बस्ते में चली गई।

चर्चा है कि 'रामायण को लेकर रणबीर इतने उत्साहित हैं कि वे कई से भगवान श्रीराम को खुद के अंदर उतार रहे हैं। कभी वह उलटा चल रहे हैं, तो कभी बड़े-बड़े पत्थर उठाने की कोशिश करते हैं। चर्चा है कि 'रामायण' की शूटिंग शुरू होने से पहले रणवीर ने मांसाहार तथा शराब

छोडकर सात्विक बन गए। वे अपने किरदार को पूरी तरह सात्विक रूप से निभाना चाहते हैं। यह इसलिए संभव है, क्योंकि उनके दादा राजकपूर भी अपनी फिल्मों के निर्माण और निर्देशन के पहले नॉनवेज और ड्रिंक से दूरी बना लेते थे।

फिल्म को भव्य रूप में दिखाने के लिए इसके वीएफएक्स पर खास जोर दिया जा रहा है। इसके लिए मशहूर कंपनी 'डबल निगेटिव' डीएनईजी से संपर्क किया गया है, जो पहले सात बार ऑस्कर जीत चुकी है। हॉलीवुड की कई फिल्मों के अलावा इस कंपनी ने 'ब्रह्मास्त्रः पार्ट-1 का वीएफएक्स भी तैयार किया था। नितिश तिवारी की इस फिल्म में ऐसे विजुअल्स दिखाने की तैयारी है, जो पहले कभी बॉलीवुड फिल्मों में नहीं दिखे। फिल्म में हाई ऑक्टेन विज़ुअल्स होंगे और दुनिया की सबसे बेहतर वीएफएक्स टीम के प्रोफेशनल्स इसका वीएफएक्स तैयार करेंगे। नमित मल्होत्रा की कंपनी 'डबल निगेटिव' इस फिल्म के पहले अयान मुखर्जी की फिल्म ब्रह्मास्त्र पार्ट 1 का वीएफएक्स तैयार कर चुकी है, जिसकी काफी तारीफ हुई थी। इस कंपनी ने हॉलीवुड फिल्म ड्यून, टेनेट, इंस्पेशन, एक्स मशीन, इंटरस्टेलर, ब्लेड रनर 2049 और फर्स्ट मैन' के लिए 7 बार ऑस्कर का पुरस्कार जीता है।

फिल्म के बनने और बंद होने की खबरों के बीच ताजा खबर यह भी है कि फिल्म की शूटिंग शुरू हो गई। यह आगे डेढ़ महीने और चलने वाली है। फिल्म की शूटिंग लगभग सवा दो महीने तक चलेगी। फिल्म में रणबीर कपूर का लुक उजागर होने के बाद अब यह सतर्कता बरती जा रही है कि सेट पर मोबाइल फोन को ही प्रतिबन्धित कर दिया गया। जिस तरह हॉलीवुड फिल्म 'अवतार' की शूटिंग शुरुआती फेज में हुई थी। वैसे ही इन दिनों 'रामायण' की शूटिंग की जा रही है। फिल्म की कहानी भगवान राम और माता सीता पर आधारित होगी. इसमें सीता हरण से राम-रावण के युद्ध तक की कहानी दिखाई जाएगी। कहा जा रहा है कि इसे तीन भागों में बनाया जाएगा। 'रामायण' में लीड रोल के साथ-साथ सैकड़ों कई और रोल भी हैं। इन दिनों जो बाकी किरदार हैं उनका मॉक शूट किया जा रहा है। आगे चलकर वीएफएक्स के दौरान स्पेशल इफेक्ट्स की मदद से उन सूट को 'रामायण' के जमाने में सैनिकों और राजा-महाराजाओं के कॉस्ट्यूम से चेंज किया जाएगा।

'ड्यून' के अलावा जिन टेक्निकल क्रू ने 'लॉर्ड ऑफ रिंग्स' पर भी काम किया था। उन्हें भी 'रामायण' के निर्माताओं ने अनुबंधित किया है। मॉक शूट की प्रक्रिया को अमूमन हिस्टॉरिकल और माइथोलॉजिकल जॉनर की फिल्मों में यूज किया जाता है। इसमें एक्चुअल शूट पर जाने से पहले कलाकारों को स्पेशल सूट में मोशन कैप्चर किया जाता है। मौजूदा दिनों की शूटिंग में नीतेश तिवारी शामिल नहीं हैं। फिलहाल यह फिल्म के निर्माता नमित मल्होत्रा की टेक्निकल टीम शूट कर रही है। वो जो रेडी प्रॉडक्ट तैयार करेंगे, उसे देखने के बाद उसके मुताबिक नितेश तिवारी शूटिंग से जुड़ेंगे।

रामायण पर आधारित 'आदिपुरूष' की दुर्दशा के बाद इस विषय पर दोबारा बड़े पैमाने पर फिल्म बनाना वाकई साहस का काम है। लेकिन, इस असफलता से नितेश का मनोबल नहीं टूटा। उन्होंने इससे सबक सीखकर उन गलतियों से बचने की तैयारी की, जिन गलतियों ने ओम राउत और उनकी फिल्म 'आदिपुरूष' को डुबो दिया था। नितेश तिवारी का मानना है कि रामायण की मूल भावना और मूल चरित्र से छेड़छाड़ किए बिना इसे भव्य रूप दिया जा सकता है। हालांकि, इसके लिए वह भी वीएफएक्स की मदद लेंगे। लेकिन, इस तकनीक को फिल्म पर हावी नहीं होने देंगे। वह वीएफएक्स की बजाए मूल कहानी और उससे जुडी भावनाओं और संवेदनाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। उन्होने यह भी सुनिश्चित किया है कि उनकी फिल्म में सभी की भावनाओं का सम्मान किया जाएगा।

अगर ये 'आम चुनाव' नहीं है तो...!

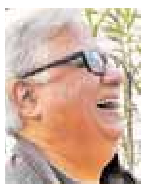

प्रकाश पुरोहित

क्या ये आम चुनाव नहीं हैं?'

'ये आम चुनाव ही तो हैं। राज्य में विधानसभा, गांव में पंचायत और बाकी के दिवंगत-उप-चुनाव होते हैं। जब पूरे देश में चुनाव होते हैं तो आम चुनाव ही कहे जाते हैं। लोकसभा के चुनाव यानी आम चुनाव।' 'प्रधानमंत्री ने कहा है कि ये आम चुनाव नहीं है। कोई गलत थोड़े ही बोल रहे होंगे। वैसे भी वही तो बोलते हैं, जो लिखा हुआ मिलता है, तो गलत कैसे बोल सकता है?'

'तुम्हारे समझने में गड़बड़ है, उनका कहना है कि ये आम चुनाव नहीं है।'

'यही तो मैं भी कह रहा हूं कि मैं तो समझ रहा था कि ये आम चुनाव हैं, मगर अब समझ आ रहा है कि ये आम चुनाव नहीं है, क्योंकि प्रधानमंत्री ने कह दिया है, यह कोई जुमला थोड़े ही है।'

'अच्छा यह बताओ, आम को तुम क्या बोलते हो, आम ही ना?'

'अब ये क्या बात हुई, राहुल जैसी बातें तो करो मत! वो भी आलू की बात करते स्वर्ण निर्माण पर चले जाते हैं। मैं आम चुनाव की बात कर रहा हूं और तुम आम पर पहुंच गए, यहां आम का क्या काम है?'

'अरे भई, हमारे यहां दृष्टांत से किसी बात को समझाने का रिवाज है, इसलिए आम को ले आया हूं। हां, तो बताओ आम को क्या कहते हो, आम ही ना! यह अलग बात है कि दशहरी हो या फिर हापुस या लंगड़ा, कहलाएगा तो आम ही ना! ठीक वैसे ही प्रधानमंत्री ने भी आम चुनाव को आम चुनाव मानने से इनकार तो किया है, लेकिन है तो आम चुनाव ही। उन्हें लगता होगा कि ये आम चुनाव, आम चुनाव नहीं है।'

'यार तुम, राजनाथसिंह की तरह धमकी बार-बार रिपीट क्यों कर रहे हो, जब देखो तब धमकी देने लगते हैं कि मुंह तोड़ जवाब देंगे, घर में घुस कर मारेंगे, कब तक सुनेंगे? तुम तो यह बताओ कि ये अगर आम चुनाव नहीं हैं तो फिर ये क्या हैं?'

'वही तो बता रहा हूं कि ये आम चुनाव ही हैं, लेकिन आम चुनाव नहीं है।'

'यानी तुम तो यह कहने की कोशिश कर रहे हो कि आम तो है पर ये आम नहीं है, तो फिर क्या है, कद्दू है क्या? कुछ तो होगा ना!'

'अब अगर पूरे देश में हो रहा है तो आम चुनाव ही होगा, फिर यह बात भी है कि अगर प्रधानमंत्री को यह नहीं लग रहा है कि ये आम चुनाव नहीं है तो कोई गहरी बात होगी।'

'तो इस बारे में चुनाव आयोग को आगे आना चाहिए और देश को बताना चाहिए कि यह आम चुनाव है तो कैसे है और प्रधानमंत्री ने इसे आम चुनाव मानने से इंकार किया है तो कहां गलतफहमी हो रही है।'

'चुनाव आयोग अपनी तरफ से कोई सफाई तब तक नहीं देता है, जब तक कि सरकार की तरफ से इशारा ना किया जाए। सरकार का मुंह देख कर जो चलते हैं, उन्हें ही तो आयोग कहते हैं। और फिर अगर प्रधानमंत्री की बात का संज्ञान आयोग लेने लगा तो कितने दिन रह पाएंगे ये अधिकारी अपनी कुर्सी पर, अब तो सुप्रीम कोर्ट के जज भी नहीं रहे आयोग की पेनल में कि बचाव में आ जाते। अभी तो सब सरकार के ही हाथ में है। सरकार के कहे बगैर तो इधर की सलाई उधर ना धरने के लिए ही तो बैठाए गए हैं... और कुछ उतारे गए हैं-बेवजह!'

'मैं तो इतनी-सी बात पूछ रहा था कि यह आम चुनाव नहीं है तो फिर क्या है?'

'समझने की कोशिश करो, तुम भी भारत की जनता की तरह हो कि... सरकार, जनता का कल्याण भी करे और यह भी बताती फिरे कि सरकार ने उनके लिए क्या-क्या कर दिया है। सोचो. अगर जनता पहले ही मान लेती कि सरकार ने तो हमारा उद्धार कर दिया है तो चुनावी-बांड की क्या जरूरत थी, ये रोड शो, ये रैलियां और ये दिहाड़ी पर सुनने वालों की आमसभा क्यों करना पड़ती? अगर पेट भरा है तो यह बताने की जिम्मेदारी जनता की है, सरकार को क्यों बताना पड़ रहा है कि अस्सी करोड़ भूखों को हम मुफ्त अनाज दे रहे हैं और जीत कर आए तो और पांच साल देते रहेंगे। आदित्य नाथ जैसे संन्यासी को यह बताना पड़ रहा है कि हमने एयरपोर्ट बनाए, फ्लाय-ओवर बनाए, स्मार्ट सिटी बनाई, क्या तुम (टुच्चा-सा) वोट भी नहीं दे सकते? अगर जनता को यह सब दिखाई दे रहा है तो मानती क्यों नहीं? इसीलिए प्रधानमंत्री को यह कहना पड़ रहा है कि यह आम चुनाव नहीं है...। और यह बात तुम भी समझ लो!'

'अच्छा, तो हर बार की ही तरह यह जुमला कहा गया है कि यह आम चुनाव नहीं है।

'इसे यूं भी समझ सकते हो कि प्रधानमंत्री का आशय यह है कि ये आम चुनाव, आम चुनाव तो है लेकिन आम चुनाव नहीं है।'

'अब तो बिलकुल ही समझ गया, बल्कि बाकी को भी समझा सकता हूं!'

तभी तीसरा बोल उठता है, जिसने अभी शुरू नहीं की है और जिसे चढ़ी भी नहीं है 'जब से चुनाव शुरू हुए हैं, तभी से यह कहने का रिवाज है कि ये आम चुनाव नहीं हैं, लेकिन तब के नेता खुद का सोचा बोलते थे, इसलिए कहते थे 'इस बार का आम चुनाव, ख़ास चुनाव है, जबकि मोदीजी के साथ ऐसा नहीं है, इसलिए लिखा हुआ बोलते हैं कि ये आम चुनाव, आम चुनाव नहीं है और इसकी क्रोनोलॉजी सिर्फ शाह ही समझ सकते हैं, ऐसा नहीं है, हमें भी समझना होगी। फिजूल बहस कर रहे हो, ये आम चुनाव ही हैं।' और तीनों पीने लगे। चंडूखाने में शांति छा गई।

ज़रा दूर से देखें अपनी जिंदगी

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

ए उफ़्फ़ सुबह से कितने काम रहते है और मेरी अहमदाबाद वाली सहेली धड़ाक से फोन लगा देती है और शुरू हो जाती है क्योंकि उसका पति सात बजे चला जाता है। मैं कहती हूँ, भई 7 बजे तक मेरे पति ऑफिस नहीं जाते। उनके जाते ही फोन लगाऊँगी। फिर मददगार आकर बताती है पड़ोस वाली मैडम और साहब का झगड़ा हो गया है। मैं सोचने लगती हूँ इतनी बड़ी उम्र में भी लोग लड़ते है।

एक सीधे हाथ की तरफ वाले शर्मा जी है, इतना ज़ोर से गाते हैं कि कान फट जाये। देखो तो, ये नेहा कितनी फुरसती है कि सुबह से जिम चली जाती है। मेरे पास तो सुबह कितने काम रहते है। मि. वर्मा को देखो सुबह से वॉक पर निकल जाते है कितना फिट रहते है। एक इनको देखों कितना पेट निकल रहा है। डॉक्टर ने दीदी को कबसे घुटने बदलने को कहा है सुनती नहीं किसी की। आज फोन लगाऊँगी। भाई-भाभी फिर घूमने निकल गये कितना घूमते हैं। देखो आज फिर पार्टी में जा रही है सीमा, तमाम-तमाम बातें जिन में आप उलझी रहती है।

क्या ये बातें इतनी ज़रूरी है कि आपने पूरा दिन इन्हीं लोगों के सोच में बिता दिया? ये तो नमूना है आपने तो 12-14 घंटे इसमें बीता दिये, फिर आपने कहा उफ़्फ़ कितना थक गई ज़रा भी वक़्त नहीं मिला। पति ने ऑफिस से घुसते ही पूछा डॉक्टर के यहां गई थी (कई दिनों से उसे कमर दर्द की शिकायत थी) कहां से जाती आज तो दम मारने की फुरसत नहीं मिली, क्या सचमुच? दूसरों की जिंदगी में झांकने में दिन बिता दिया सिर्फ एक दिन खुद की जिंदगी में झांक के देखा क्या?

चलिये आज एक अभिनय करें, मानाआप रंगमंच पर कोई रोल प्ले कर रहे हैं। पहले दिन आपका रोल वहीं होगा जो आप अपनी ज़िंदगी में निभा रहें है। दूसरा रोल आपको दूसरा दिन दिया जाता है कि आप वो अभिनय करे जो वास्तव में आप करना चाहते थे। तब आपको होगा अहसास कि सुबह से रात तक आपने दूसरों की ज़िंदगी पर चर्चा की। दर्शक दीर्घा में बैठकर देखिये आप को अपना कौन रोल पसंद आ रहा है और किस रोल में आप खुश है। एक रोल में आप दुनिया की फिक्र में डूबे हैं। एक रोल में आप सिर्फ अपने आप के ध्यान में है नहीं इसे स्वार्थी होना नहीं कहते शुरूआत अपने स्वास्थ्य से कीजिये मानसिक, शारीरिक दोनों किताबों का बहुत शौक था आपको अब मोबाइल पर बात करने यू ट्यूब पर चैनल बदलने में वक़्त ज़ाया किया जा रहा है। कोई अर्थपूर्ण मूवी देखी या टी.वी. पर मारधाड़ या सास बहू के साथ उलझे हैं। पानी पूरी आपका

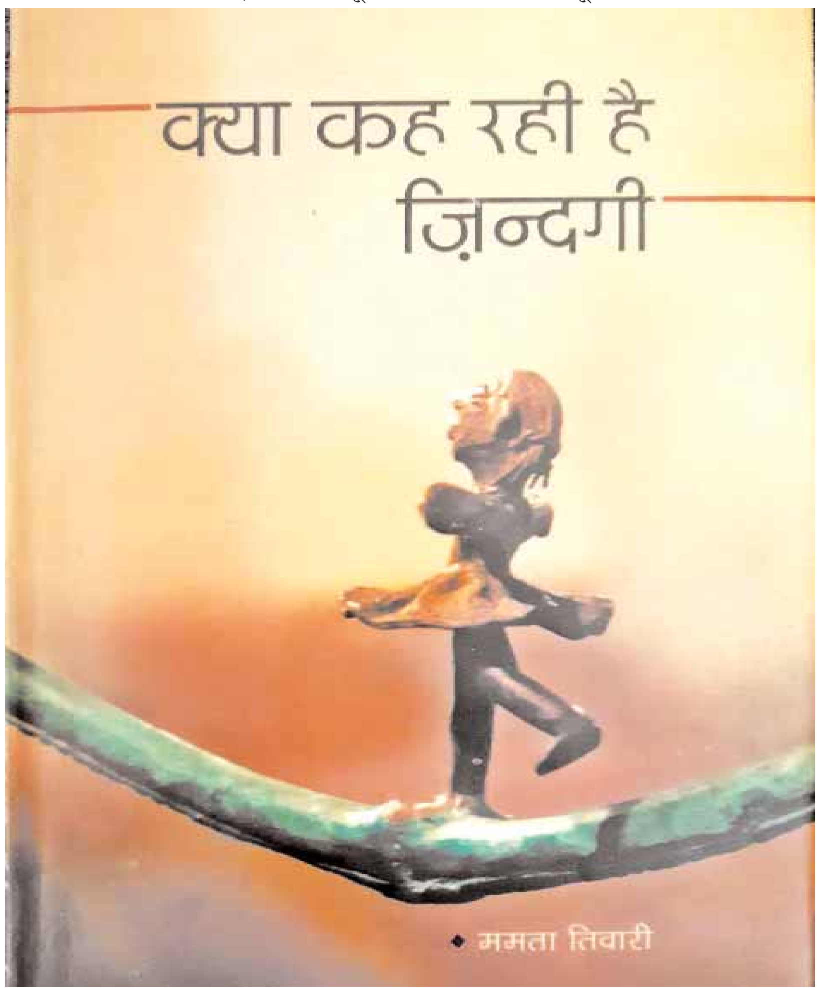

प्रिय व्यंजन है पर जौमेटो है, स्वीगी है कौन दूकान तक जाये। टी.वी. पर अवार्ड फंक्शन आ रहा है कौन भारत भवन कत्थक देखने जाये, पुस्तक मेला घूमे, ऑनलाइन ही शॉपिंग ठीक है, नाटक देखने को आप तरसते थे? आपको दूर से देख के लगेगा ये जो स्टेज पर अभिनव करता फ़िरदार है किसका है, क्या ये मैं हूँ जो इतनी बेकार सी अर्थहीन जिंदगी बीता रही हूं, पार्टी में जाना ज़रूरी है उसके लिये दो दिन से तैयारी चल रही है। हाय ये साड़ी तो उनके यहां पहन चुकी हूं। आपको पता है जो बातें आप करने वाली है। वह भी आप कर चुकी है। पुनः दोहरा रही है क्योंकि आप के पास अपडेट होने का वक़्त नहीं है, मौजूदा समाचारों से।

आपको डिग्री तो याद है पर उसके अनुसार आपके पास अपने विषय की जानकारी नहीं है। आप समझदार है, पढ़े लिखे है अपने बारे में सोचना अपकी प्राथमिकता होनी चाहिये, जब आप स्वस्थ खुश होंगे तब ही तो दूसरों को खुशी दे पायेंगे फिर चाहे आप कुछ भी करें अच्छा स्वास्थ्य और चेहरे पर खुशी ही आपकी प्रसिद्धि और उपलब्धि है वरना सोचते रह जायेंगे क्या खोया क्या पाया ?

क्या खोया? क्या पाया?
जमा किया खाते में धन अपार,
हज़ार मन अनाज तबाह किया ।
सेरों खाया, ढेरों पचाया
सालों सो भी लिया,
ले के डकार तृप्ति की सोचा
कि मैंने जीवन जी लिया
हाय! ये मैंने क्या किया?
याद करो,
कितनी सुबह तुमने चिड़ियों की
चहचहाहट सुनीं?
सुनहली धूप में कब तुमने स्नान किया?
शाम के धुंधलके में कब मंत्र पाठ किया?
हसीन रात की मादक गहराईयों में,
कब ग़ज़लों का आनंद लिया?
व्यर्थ के तनावों में उलझ कर,
चंद कड़वे घूँट निगलकर, तुमने सोचा,
कि जीवन अमृत पी लिया
हाय ये तुमने क्या किया?
कितनी सुबह फूलों के साथ
बाग़ों में घूमा किये,
कितनी दुपहर गुनगुनाती धूप में
फुरसत से चाय की प्याली के संग जिये...
कितनी शामों में हाथ में हाथ डालकर
सूर्यास्त का मंज़र देखा किये
कितनी रातों में तेरी आँखों से
मुहब्बत के जाम पिये।
अब तक सोच रहे थे कि
जीवन हमने साथ जीया
हाय! ये हमने क्या किया?

तो चुन लिया अपना किरदार आपने मैं जानती हूं, आपने इस पे ज़रूर सोचा होगा तो मुस्कुरा के पूछिये अपने क़िरदार से सुबह सवेरे और क्या कर रही है जिंदगी?

अयोध्या में रामलला का हुआ सूर्याभिषेक

राम नवमी के शुभ अवसर पर अयोध्या के राम मंदिर में रामलला का सूर्याभिषेक किया गया था। पूरा देश इस अद्भुत क्षण का साक्षी बना था। मंत्रोच्चारण के बीच रामलला का ललाट सूर्य किरणों से जगमगा उठा था।

राजकुमार कुम्भज की दो कविताएँ

माँ ने सिखाया

माँ ने बर्तन माँजना सिखाया
मैंने शब्दों को माँजना सीख लिया
माँ ने मिर्च पीसना सिखाया
मैंने दुःख को पीसना सीख लिया
माँ ने कपड़े धोना सिखाया
मैंने घृणा को धोना सीख लिया
माँ ने घर बुहारना सिखाया
मैंने शत्रु को बुहारना सीख लिया
माँ ने आग पूजना सिखाया
मैंने आग से खेलना सीख लिया
वह सिखाती गई, मैं सीखता गया
माँ ने दिखाई दुनिया, मैं देखता गया
उसने समझाया मुझे, मैं समझता गया

फिर एक दिन माँ ने बताया मुझे
कि चारों तरफ़ बढ़ गया है अन्याय
अब, छोड़कर माल-असबाब सब
घर के लिए, कविता के लिए, लड़ना होगा
और मैं लड़ने लगा।

माँ ने कहा है

माँ ने कहा है
कि हत्यारे को हत्यारा
और नंगे को नंगा कहने का
यही, सही वक़्त हुआ जाता है
तो अब, हत्यारे को हत्यारा
और नंगे को नंगा कहना ही होगा
और मैं कहने लगा।

//भाषान्तर//

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज लैंग्स्टन ह्यूज की एक कविता का अनुवाद। लैंग्स्टन ह्यूज प्रमुख अफ्रो - अमेरिकन कवि हैं । कविता के अतिरिक्त उन्होंने कहानियां , उपन्यास और नाटक भी लिखे ।मात्र 19 वर्ष की अवस्था में ' द नीग्रो स्पीक्स ऑफ़ रिवर्स ' जैसी चर्चित और बहुपठित कविता लिखकर उन्होंने साहित्य की दुनिया में अपनी आमद की घोषणा कर दी थी । कविता की दुनिया में जैज़ पोएट्री का भी उन्हें जनक माना जाता है ।

भूखे बच्चे

ओ भूखे बच्चे ,
मैंने यह दुनिया तुम्हारे लिए नहीं बनाई है
मेरी रेल्वे कम्पनी का कोई स्टॉक नहीं खरीदा है तुमने।
तुम मेरी कम्पनी के निवेशक भी नहीं हो।
क्या कोई शेयर है तुम्हारे पास स्टैण्डर्ड ऑइल का ?
यह दुनिया मैंने अमीरों के लिए बनाई है
ये अमीर हैं
और हमेशा अमीर रहेंगे,
तुम्हारे लिए नहीं
ओ भूखे बच्चे।

कभी भयावह तो...कभी क्रूर!

❑ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

ने टफ्लिक्स का नया शो 'बेबी रेनडियर' रिचर्ड गैड के पात्र नाटक का बदल है, जिसमें मार्था कम उम्र के रिचर्ड का पीछा करती है। मार्था से उसकी मुलाकात उस पब में होती है, जहां वह काम करता है। मार्था उसका इ-मेल पता जान लेती है और उसे हर रात इ-मेल भेजना शुरू कर देती है। इ-मेल 'मेरे आइ-फोन से भेजे गए' के साथ खत्म होते हैं।

शो में गैड के किरदार का नाम है डॉनी। डॉनी को एहसास होता है कि मार्था के पास आइफोन नहीं है और यहां से रीढ़ की हड्डी में ठंडक की लहर दौड़ने का एहसास है। जैसे-जैसे मार्था जुनूनी होती जाती है, डॉनी हद दर्जे आत्म-घाती हो जाता है। दोनों भयानक जाल में फंस जाते हैं। यह शो लगातार डराता-परेशान करता है, लेकिन एपिसोड को बंद करने नहीं देता। सात एपिसोड में इस कहानी में डॉनी स्टैंडअप कॉमेडियन और लेखक है, जो सफलता के लिए बेताब है।

जेसिका गनिंग के साथ मार्था को सही रूप दिया है, जो दया, दिल टूटने से लेकर क्रूर, हिंसक, जलन दिखाने से हिचकती नहीं है। यह आसान भूमिका नहीं है और वह सचमुच शानदार हैं। जब मार्था रोते हुए डॉनी के पब में जाती है तो वह उसे चाय देता है। बस यह इंसानियत से भरा कदम कई भयानक फैसलों में पहला है, जो उसे दर्द और तकलीफ की उस दुनिया में ले जाता है। डॉनी इस बात से खुश है कि मार्था उसमें दिलचस्पी लेती है और बदले में वह उस पर ध्यान देता है, लेकिन मार्था पीछा करने वाली बन गई। एक बार जब वह उस आदमी पर फिदा हो जाती है तो वह उसे 'बेबी रेनडियर' कहती है, उसके जीवन के हर कोने में रास्ता बनाती है। 'बेबी रेनडियर' को खास फिल्माया है। ये किसी हॉरर फिल्म की तरह लग रही है। यह कभी-कभी भयावह है तो कभी दबाव बनता है। आमतौर से ऐसी कहानियां महिला के शोषण की होती है, लेकिन यहां उम्रदराज महिला को इस तरह से बर्ताव करते देखना परेशान करता है।

यह शर्म, क्रूरता, मज़ाक, अहंकार, दया, मानसिक बीमारी, अकेलापन, पीछा करने की आदत, इच्छा, कठोर दवाओं, आशा और निराशा दिखाती है। वह मार्था के साथ उलझ रहा है, जबकि वह जानता है कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि उसे उसके लिए खेद महसूस होता है या वह ऐसा इसलिए कर रहा है, क्योंकि हालात को संभावित सामग्री की तरह देखता है? जब मार्था पहली बार कॉमेडी कार्यक्रम में दिखाई देती है तो झगड़ते हैं और देखने वाले इसे हाथों-हाथ लेते हैं। अगली बार उनकी बातचीत अनुकूल नहीं होगी, इस हालत में क्रूर कौन है?

'बेबी रेनडियर' तनाव और परेशान करने वाला दृश्य बनाता है। दर्द सहना कठिन होता है और जो दायरा बढ़ता है, वह फोकस खो देता है। डॉनी कहते हैं- यहां से इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता, पर ऐसा होता है। बांध कर रखने वाला और न भूलने वाला शो है। एपिसोड चार, जिसमें डॉनी की हालत के बारे में और अधिक पता चलता है। यह टेलीविजन के सबसे ज्यादा परेशान करने वाले एपिसोड में से है, जो मैंने लंबे समय में देखा है। इस शो को देखने के लिए पहले से तैयार होकर आएं।